LIFE OF DR. DUFF.

पादरी डफ साहिब का वृत्तान्त।

जिस को

पादरी जे. सी. आर. यूइंग साहिब ने

नार्थ इण्डिया ट्राक्ट सोसैटी के लिये अंग्रेज़ी से

हिन्दी में उलथा कराया।



इलाहाबाद

मिशन प्रेस में छापा गया

सन १८८९ ई०।

१ छपाई १५००] N. I. T. S. [दाम ६ पाई।

Price 6 pie.

LIFE OF DR. DUFF.

पादरी डफ साहिब का बृत्तान्त।

जिस को

पादरी जे. सी. आर. यूइंग साहिब ने

नार्थ इण्डिया ट्राक्ट सोसैटी के लिये अंग्रेज़ी से

हिन्दी में उलथा कराया।

इलाहाबाद

मिशन प्रेस में छापा गया सन १८८९ ई०।

१ छपाई १५०२]　　N. I. T. S.　　[दाम ६ पाई।

Price 6 pie.

सूचीपत्र ।



पितृपुत्रपवित्रात्मनेनमः ।

डाक्टर डफ साहिब का वृत्तान्त ।

पहिला अध्याय ।

डाक्टर डफ साहिब की बाल्यावस्था के विषय में ॥

बहुत बरस बीते की बात है कि स्काटलेण्ड देश में डफ नाम एक धर्म्मी मनुष्य अपने कुटुम्ब सहित रहते थे । उन के पास सांसारिक पदार्थ और सामग्री तो अधिक न थी परन्तु ऐसी कुछ वस्तु थी जो सांसारिक धन संपत्ति से बहुमूल्य थी अर्थात् उन के मन में ईश्वर का भय और प्रेम था । परमेश्वर ने उन्हें एक पुत्र दिया जिस का नाम उन्हों ने एलिकजंडर रखा ॥

जब वह लड़का कुछ बड़ा हुआ तो उस का पिता बहुधा उस से प्राचीन समयों के उन उत्तम २ मनुष्यों की दशा को जो अपने धर्म्म के न छोड़ने के कारण मारे गये थे वर्णन

किया करता था । उस ने उन दूर २ देशों का बर्णन किया जिन में ऐसे करोड़ों मनुष्य रहते थे कि जिन्हों ने कभी मुक्तिदाता का नाम भी नहीं सुना था । यद्यपि एलिकजंडर डफ जगत में अति प्रसिद्ध और नामी और ईश्वर की महिमा के प्रगट करने का द्वार हुआ तथापि वह नित्य अपने पिता को प्रेम से स्मरण किया करता था जिस ने लड़काई के समय उस के मन में वह बीज बोया जिस से अंत में मानो एक बड़ा पेड़ हुआ ॥

बालकपन के समय उस ने दो अद्भुत स्वप्न देखे जिन का बर्णन करना यहां उचित है । एक समय उस ने स्वप्न में देखा कि मानो महाबिचार का दिन आ पहुंचा और एक बड़े उत्तम सिंहासन पर मनुष्यों का धार्मिक न्यायकर्त्ता बैठा है और उस न्यायकर्त्ता के सन्मुख अगणित मनुष्य पिछला निर्णय सुन्ने के लिये आये हैं । उन में से किसी २ के लिये अनन्त दण्ड भोगने का निर्णय किया गया और कोई २ अनन्त-जीवन में प्रवेशित हुए । इतने में स्वप्न देखनेवाले का मन संभ्रम से भर गया क्योंकि वह नहीं जानता था कि मुझ को न्यायकर्त्ता स्वर्ग में

अथवा घोर नरक में भेजेगा । सो वह पलंग पर कांपता हुआ पड़ा रहा और जब उस के भी निर्णय का समय पहुंचा तब वह भय से थर्थराके चौंका और जाग उठा । उस को समझ में यह स्वप्न मानो स्वर्गीय शब्द था जो पुकारके कहता था कि पश्चात्ताप करो पश्चात्ताप करो क्योंकि महाबिचार का दिन निकट आया है ईश्वर के सन्मुख जाने को सिद्ध हो जाओ ॥

उस का दूसरा स्वप्न यद्यपि कुछ २ भयंकर था तथापि अधिक अद्भुत था । एक दिन अकस्मात् वह नदी के किनारे पर लेटके सो गया और स्वप्न में देखा कि थोड़ी दूर पर एक प्रकाश जो सूर्य्य की ज्योति से भी अधिक ज्योतिमान प्रगट होता था चमकता है । उस की ओर दृष्टि करके उस ने जो देखा तो तुरन्त विदित हुआ कि उस के बीच में से एक सुनहरा रथ जो कि उत्तम २ साजों से सजा हुआ है और जिस में शीघ्रगामी चार घोड़े जुते हैं निकल रहा है । उस की सुन्दरता और प्रताप को देखके उस लड़के का मन अति चकित हो गया । थोड़ी बेर के उपरान्त वह रथ उस के पास पहुंचा और उस के भीतर से एक शब्द

ओ किसी मनुष्य का न था यह कहता हुआ सुनाई दिया कि इधर आ एक निज काम तेरे करने के लिये ठहराया गया है। जब वह लड़का उस आज्ञारूप शब्द के अनुसार उठने लगा तब उस की नींद जाती रही और उसे प्रगट हुआ कि वह केवल एक स्वप्न था परन्तु उस पर उस स्वप्न का यहां तक प्रभाव हुआ कि उस ने उस को अपने माता पिता से बर्णन किया और बहुत बरसों के उपरान्त अपने लड़केबालों को भी सुनाया। यह स्वप्न उस के निकट मानो स्वर्गीय शब्द था जो पुकारके कहता था कि हे लड़के ईश्वर की सेवा करना तुम को उचित है। संसार मानो एक बड़ा खेत है और ईश्वर तुझे हंसुआ देके कहता है कि तू जाके खेत काट॥

उस ने न केवल अपनी लड़काई में उन स्वप्नों को देखा बरन युवावस्था में बड़े २ भय और उपद्रव में पड़के अद्भुत प्रकार से बच गया और इन बातों से उस के मन पर बड़ा प्रभाव हुआ। एक समय वह नदी में जिस का जल बड़े बेग से बह रहा था पानी भरते हुए गिर पड़ा और बड़ी कठिनता से उस में से बच निकला। दूसरी बेर वह अपने एक मित्र के संग एक भयंकर

स्थान में पड़ गया जहां ऐसा बड़ा दलदल और झील थी कि यदि उस में वे गिरते तो अवश्य नष्ट हो जाते परन्तु ठण्ड की अधिकाई और रात्रि के अंधकार के होते ही वे दोनों बालक किसी नाले अथवा गहिरे पानी में गिरने का भय करते हुए बड़ी सावधानी और रक्षा के उपाय के संग आगे बढ़े और एक ने दूसरे को शांति देने का बहुत यत्न किया परन्तु थोड़ी बेर के उपरान्त उन का सामर्थ्य यहां तक जाता रहा कि कठिनता से उन की बातचीत सुनाई देती थी और अंत को वे अशक्त होके स्वास लेने के लिये बैठ गये। उस दशा में उन्हों ने ईश्वर से ज्यों प्रार्थना किई त्यों अकस्मात् कुछ दूर पर एक स्पष्ट प्रकाश उन्हें दिखाई पड़के गुप्त हो गया। उसे देखके वे उस स्थान से जहां ऐसा हिम पड़ा था कि यदि वहां बड़ी बेर लों बैठे रहते तो कदाचित् मर जाते उठ खड़े हुए। फिर ढाढ़स बांधके आगे दौड़े और तुरन्त एक बाटिका की भीत लों पहुंचे। वह प्रकाश जो उन्हें ठीक समय पर दिखाई दिया था सो केवल किसी मछुवे की मशाल का था जो रात को मछली का आखेट कर रहा था तथापि उस के

द्वारा वे बेचारे लड़के एक झोंपड़ी में पहुंचे जहां उन को उष्णता और भोजन मिला ॥

इस के उपरान्त सदाकाल डफ साहिब क्लेश और भय के समयों में बारंबार उस प्रकाश को स्मरण करके सोचते थे कि वही ईश्वर जिस ने हम बेचारे लड़कों को मार्ग दिखाने के लिये उसे भेजा कभी मुझ क्लेशित और व्याकुल मनुष्य को न छोड़ेगा । जब एलिक्जंडर बड़ा हुआ तो उस के माता पिता ने उसे पार्थ नाम शहर को एक पाठशाला में भेज दिया । वहां वह परिश्रम करके सब लड़कों से उत्तम श्रेणी का निकला इस के उपरान्त वह कालिज में जाके पढ़ने लगा और वहां उस ने अपनी प्रवीणता और धारणशक्ति के कारण बहुत इनाम पाया । वह अपने संगी पढ़नेहारों को आनन्दित करता और कभी अपने मुंह से कोई दुर्बचन निकलने नहीं देता था । उस की यह रीति थी कि इतवार के दिन लड़कों को एकट्ठा करके उन्हें उन उत्तम शिक्षाओं को देता था जिन्हें उस ने आप अपने पिता से प्राप्त किई थीं । वह पढ़नेहारा होके अपने समय को ऐसी रीति से काम में लाया कि वह न केवल आनन्दित बरन बहुत अच्छा

निकला । वह अपनी जन्मभूमि और घराना और मित्रों को बहुत प्रिय जानता था और ऐसा ज्ञानी था कि उस देश में उस को किसी बड़े अधिकार लों पहुंचने में कुछ संदेह न था तो क्या प्रयोजन था कि वह अपने देश और प्रिय लोगों को छोड़के और कहीं जाय । परन्तु उस ने उन सभों को छोड़के आनन्द से पाठशाले में पढ़ने की संती कठिन और भयंकर काम करने को प्रसन्न हुआ और अपने माता पिता के घर से सहस्रों कोस दूर जाके बिदेशियों में रहने लगा । उस के इस काम करने का कारण आगे प्रगट किया जायगा ॥

दूसरा अध्याय ।

चोंगा का उठाना ॥

एलिकजंडर के मित्रों में से जान उरकूहार्ट नाम एक मनुष्य उस का बड़ा प्रिय था । जो प्रेम वे परस्पर रखते थे वह अति अधिक था क्योंकि उस की दृढ़ता की नेवें इन पदार्थों पर थीं अर्थात् वे दोनों तरुण एक ही ईश्वर की सेवा में आनन्दित और उस के बलिदान होने

के कारण स्वर्गीय आनन्द में साझी होने की आशा रखते थे। जब एलिकजंडर छुट्टी के समय अपने घर को लौट आता तो बारंबार अपने माता पिता से उस मित्र का वर्णन बहुत करता था। उस ने उन से एक बेर कहा कि एक दिन उरकूहार्ट ने बड़ी गंभीरता से अपने साथियों से यह कहा कि मैं बिदेशियों के बीच में जाके सुसमाचार सुनाने की अभिलाषा करता हूं और उस ने उन्हें इस के लिये उभाड़ा भी कि वे सब उस काम के विषय में अपने कर्तव्यकर्म्म पर भली भांति से बिचार करें। योंही वर्णन सुनते २ एलिकजंडर के माता पिता भी उस मित्र के जान्नेहारे हो गये। उस समय एलिक- जंडर की माता ने यों बिचार किया होगा कि मैं इस बात पर बहुत आनन्दित हूं कि मेरे प्रिय पुत्र को संती वह दूसरा बालक दूर देश में जानेवाला है मेरा बेटा जो बहुत बुद्धिमान् और चतुर है सो पादरी होके अपने लोगों के बीच में रहेगा वह हमारे ही समीप कहीं बास करेगा और हर एक इतवार को जब मैं गिरजे में जाया करूंगी तब उस का धर्म्मोपदेश सुना करूंगी उस समय मुझ को कैसा आनन्द प्राप्त

होगा। मेरा एलिक अत्यन्त उत्तम उपदेश देनेहारा होगा क्योंकि लोग उस के विषय में ऐसी प्रशंसा की बातें कहते हैं जिस से मुझे निश्चय होता है कि सकल स्काटलेण्ड देश में उस से अधिक कोई भली भांति से सुसमाचार का प्रचार न कर सकेगा॥

कुछ दिनों के उपरान्त एलिकजंडर जाड़े की छुट्टी में बहुत शोकित और व्याकुल होके अपने घर फिर आया। अपनी रीति के अनुसार उस के माता पिता ने प्रेम और स्नेह से उस का सत्कार और प्यार किया और उस ने भी अपनी उदासी को छिपाके उन को आनन्दित करने चाहा। सांझ के भोजन के उपरान्त अपने माता पिता के संग बैठके वह भांति २ के वृत्तान्त कहने लगा। यह तो सत्य है कि सदाकाल जब वह कालिज से लौटके घर में आता था तब अपने प्रिय लोगों से वहां की सब दशा प्रगट करने में बहुत प्रसन्न होता था बरन वह हर प्रकार की बातों का वर्णन ऐसी उत्तम रीति से करता था कि यद्यपि सुन्नेहारे उस के माता पिता के समान उस का पक्ष न करते तथापि उस की बातचीत सुनके अत्यन्त

आनन्दित होते थे। परन्तु उस रात को उस की माता ने इस बात पर अधिक अचंभा किया कि उस ने अपनी सारी बातचीत में अपने प्रिय मित्र की चर्चा का जो बहुधा उस की बातचीत की निज भूमिका थी नाम भी न लिया। अंत में उस के पिता ने उस से उरकूहार्ट की दशा पूछी इस पर एलिकजंडर के मुख पर तुरन्त शोक के चिन्ह प्रगट हुए न केवल इस लिये कि उस के पिता के प्रश्न से उस के मन का घाव फिर नवीन हुआ बरन इस कारण कि उस ने जाना कि अब मुझे कुछ ऐसा कहना पड़ेगा जिस से मेरे प्रिय लोगों को अत्यन्त शोक होगा। सो थोड़ी देर लों वह मौन रहा फिर इस के उपरान्त उस ने कहा कि उरकूहार्ट तो मर गया। इस प्रकार उस ने एकाएक उस तरुण के मरने का संदेश दिया जो कि परदेशियों में जाने का मनोर्थ रखता था परन्तु वहां जाने को संतो वह स्वर्गीय सुख और आनन्द में प्रवेश होने को बुलाया गया। फिर उन बातों के कहने के लिये जिन से उस ने जाना कि मेरे प्रिय लोगों को दुःख और शोक प्राप्त होगा दृढ़ता करके अपनी माता की ओर दृष्टि किई

और सोच सोचके धीरे २ कहने लगा कि आप का बेटा उस मित्र का चोंगा अर्थात् (उस का काम) उठा ले तो आप क्या कहते हैं। आप ने तो उस अभिप्राय की प्रशंसा किई थी जिस के कारण उरकूहार्ट अपनी जन्मभूमि छोड़ने को तत्पर हुआ था॥

इतना कहने के उपरान्त एलिकजंडर ने वह बातें कहीं जिन से उस का परदेशियों में जाने का स्थिर अभिप्राय उस के माता पिता को प्रगट हुआ अर्थात् मैं वह चोंगा उठा चुका हूं। पहिले तो उस के माता पिता यहां लों बिस्मित और व्याकुल हुए कि बोल न सके और हम नहीं जानते कि उस समय उन्हों ने अपने प्रिय पुत्र से क्या कहा। यद्यपि वे धर्म्मी और ईश्वर के सच्चे भक्त थे तथापि ऐसा विदित होता है कि जैसा इब्राहीम को शोक हुआ जब कि ईश्वर ने इसहाक के विषय में अपनी इच्छा उस पर प्रगट किई थी तैसा ही इन्हें भी शोक और दुःख हुआ होगा। इतना तो निश्चित है कि यद्यपि वे बिचारते थे कि कदाचित् इस संसार में हम उस को फिर न देखेंगे तथापि अंत में उन्हों ने उस के जाने

को प्रसन्न किया क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि ईश्वर की उस बुलाहट के अनुसार चलने से उसे रोकें कि जिस को उस ने बालकपन के समय स्वप्न में सुना था अर्थात् यह कि इधर आ तेरे करने के लिये एक काम है ॥

भला वह कौन सा काम था कि जिस में उसे मानो अपने मित्र का मृत्युपत्र समझके डफ साहिब जाने को उपस्थित हुए और जिस में सब प्रिय लोगों को छोड़ने और दुःख उठाने को तत्पर हुए । वह तो यह था कि जो प्रभु यसू खीष्ट ने स्वर्ग को जाने से पहिले अपने शिष्यों को यह पिछली आज्ञा दिई थी कि तुम सकल संसार में जाके हर एक मनुष्य के साम्हने सुसमाचार का उपदेश करो और उस आज्ञा के साथ यह बचन भी कहा कि मैं समय के अंत होने लों प्रतिदिन तुम्हारे संग हूं ॥

प्राचीन समयों से उस बचन से शांति पाके उस आज्ञा के अनुसार लोग निस्तार का सुसमाचार परदेशियों को देने के लिये जाया करते हैं । केवल पुरुष ही नहीं बरन स्त्रियों ने भी आनन्द से अपने देश और घर द्वार को उसी अभिप्राय से छोड़ दिया है जिस्तें उन से जो अनन्तजीवन

के प्यासे हैं कहें कि हे सब प्यासो पानी के पास आओ हम ने जीवन का सोता पाया है और तुम से कहते हैं कि आओ और उसे पीओ। हे थके और जो भारी बोझ के नीचे दबे हो उस के पास आओ जिस ने हमारे पापों का भार अपने ऊपर उठा लिया है प्रभु ख्रीष्ट ने हमारे लिये स्वर्ग का द्वार खोल दिया है परन्तु हम अकेले भीतर जाने नहीं चाहते हैं। आओ हे हिन्दुओ हे बौद्धमतावलंबियो हे महम्मदियो हे दुष्टो और हे सारे मनुष्यो हमारे संग प्रशंसा और स्वर्ग के राज्य में संभागी होओ॥

मिशनरी के काम के विषय में जो बिचार डफ साहिब के थे सो उन की एक चिट्ठी से प्रगट होते हैं। एक मिशनरी कमेटी ने उन को कलकत्ते में सुसमाचार सुनाने के लिये भेजने को कहा सो अधिक प्रार्थना करने और अपने मन को जांचने के उपरान्त उन्हों ने उस कमेटी को यों उत्तर दिया कि अब मैं यशैयाह भविष्यद्वक्ता के बचन में आप के प्रश्न का उत्तर दे सकता हूं अर्थात् मैं उपस्थित हूं मुझे भेज। वहां का काम यद्यपि कठिन हो तथापि वह ईश्वर की ओर से है इस कारण निश्चय सिद्ध

होगा और यद्यपि मुझे बहुतेरी कठिन बातों का सामना करना पड़ेगा परन्तु वह पापियों को प्रभु ख्रीष्ट की ओर फेरने में बड़े आनन्द का कारण है अपने उस बहुमूल्य भाग पर सोच करने से मैं बहुत आनन्दित हूं और सकल दूसरी वस्तु उस के आगे मुझे व्यर्थ और निष्फल जान पड़ती हैं ॥

फिर साहिब हिन्दुस्तान में जाने से पहिले बारंबार परदेशियों में सुसमाचार सुनाने के विषय में गिरजा घरों में धर्म्मोपदेश किया करते थे। उन के उपदेश से सुन्नेहारों के हृदय में उस का बिशेष प्रभाव हुआ इस कारण कि उपदेश करने-हारे ने उस काम के लिये जिस का कि बर्णन करते थे अपने को सौंप दिया था। एक बार आंसू भर भरके उन्हों ने यों बर्णन किया कि पहिले मैं परदेशियों की भलाई और मुक्ति के बिषय में कुछ भी चिंता नहीं करता था बरन उस समय में अपने आत्मा की मुक्ति की भी कुछ चिंता न करता था परन्तु जब ईश्वर की कृपा से मैं अपने आत्मा की मुक्ति की चिंता करने लगा उसी समय से मैं ने परदेशियों की मुक्ति की भी चिंता करने का आरंभ किया। उसी समय मैं ने अपनी कोठरी में घुटना टेककर ईश्वर से

यों बिन्ती किई कि हे प्रभु तू जानता है कि सुसमाचार फैलाने के लिये रुपैया देना मुझे अनहोना है परन्तु जो मेरे पास है उसे चढ़ाता हूं अर्थात मैं आप अपने को तुझे सौंपता हूं हे प्रभु क्या तू मुझे ग्रहण करेगा॥

डफ साहिब ने अपने माता पिता को शांति देने और आनन्दित करने में बहुत यत्न करके अपनी माता से बिन्ती किई कि वह अपने पुत्र को ईश्वर से अधिक प्यार न करे और अपने पिता को उस ने यों लिखा कि क्या मुझे प्रभु के हाथ में सौंपने से आप को कुछ हानि होगी। कभी नहीं क्योंकि उस ने मुझे इस काम के योग्य समझके बुलाया है। ईश्वर आप को इब्राहीम की आशीष और उस के बिश्वास से धनी ठहरावेगा। उस की इच्छा पूरी करने और उस के ठीक २ आज्ञाकारी होने में वह सहस्र गुण प्रतिफल देगा। ईश्वर आप को और मेरी प्यारी माता को आशीष देवे॥

एलिकजंडर डफ यों समझके कि कदाचित् मैं अपने प्यारे स्काटलेण्ड देश में कभी न लौटूंगा एक दूर देश में उन परदेशियों के बीच जिन की बोली को वह सर्वथा नहीं जानते थे जाने को सिद्ध हुए॥

तीसरा अध्याय ।

समुद्र के जोखिम ॥

डफ साहिब ने हिन्दुस्तान देश के जाने से पहिले एन्ना स्काट ड्राईसडेल नामे एक स्त्री से बिवाह किया जो कि उन के दुःखों और आनन्दों में बरसों लों साथ में रहके मानो ईश्वर की ओर से उन को एक उत्तम आशीष मिली ॥

सन १८२९ ईस्वी के अकतूबर महीने में वे दोनों एक जहाज़ पर जो कि हिन्दुस्तान में जाने के लिये तैयार हुआ था सवार हुए। उन्हों ने यह न जाना कि कलकत्ता शहर में पहुंचने के पहिले हम किन २ जोखिमों और दुःखों में पड़ेंगे परन्तु निश्चय है कि जिस समय इंगलिस्तान की भूमि उन की दृष्टि से छिपने लगी उस समय उन के मन अति क्लेशित हुए होंगे क्योंकि निज देश और अपने प्रिय लोगों से न्यारा होना हर दशा में कठिन और शोक का कारण होता है ॥

जिस जहाज़ पर वे सवार हुए वह कई बेर बड़ी २ आंधियों में पड़ा। अठवारों लों प्रतिदिन प्रचंड और आंधी सी वायु चलती रही और

जहाज़ भांति २ के रोकों से रुका रहा। यहां लों बिलम्ब हुआ कि साढ़े तीन महीने में वह जहाज़ केप आफ गुड होप स्थान के निकट पहुंचा जो कि इंगलिस्तान और हिन्दुस्तान के प्राचीन मार्ग के बीचोबीच में है। आज कल सूएज़ की नहर के मार्ग से और भाफ की सहायता से उतने समय में हिन्दुस्तान से इंगलिस्तान लों दो बेर आना जाना हो सकता है। केप आफ गुड होप के निकट पहुंचके उन थके और आंधी से दुःखित लोगों ने वहां उतरने और कई दिन तक बिश्राम करने की आशा पर बड़ा आनन्द मनाया होगा परन्तु उस बंदर में पहुंचने से पहिले ही वे सब एक भयंकर जोखिम में पड़ गये। वह यह है कि फरवरी महीने की तेरहवीं तारीख की आधी रात के समय जब कि दीपक बुझा दिये गये थे और अधिक लोग सो रहे थे तब जहाज़ ने रेते के एक टीले से टक्कर खाई जिस की धमक से सब लोग चौंक उठे और घबरा घबराके आपस में पूछने लगे कि यह कौन सी बिपत्ति आई। जब कंबल और चादर लपेटे हुए जहाज़ के उपरौठे खण्ड पर वे लोग चढ़ गये तो उन को जान पड़ा कि

जहाज़ में रेते के एक टीले से ठोकर लग गई है जिस के झोंके से जहाज़ टुकड़ा २ हुआ जाता है और फेनदार और गड़गड़ाती लहरें ऐसी चढ़ी आती हैं जैसे भूखा बाघ अपने शिकार पर झपटता हो ॥

जब डफ साहिब ऊपर आये ते जहाज़ का अधिपति मिला और अति शोक करके पुकारने लगा कि हाय २ जहाज़ ते नष्ट हुआ । उस रात को भयानक दशा कौन बर्णन कर सकता है । जहाज़ की ऐसी दशा हुई कि किसी दृढ़ बस्तु के बलवन्त सहारा के पकड़े बिना किसी में ऐसी सामर्थ्य न रह गई कि बैठे अथवा खड़ा होवे । बरन ऐसा अंधियारा छा रहा था कि बड़ी कठिनता से एक दूसरे को देख सकता था । सभों ने मरने का और उस के उपरान्त ईश्वर के सन्मुख न्याय के लिये खड़े होने को निकट समझा । उस समय एक जहाज़ी का शब्द यों सुन्ने में आया कि हाय २ मेरी क्या गति होगी क्योंकि मैं बड़ा कपटी हूं । वह बेचारा मृतकों और जीवतों के पवित्र निष्पक्ष न्याय-कर्त्ता अर्थात् ईश्वर के सन्मुख जाने से बहुत डरता था । जहाज़ पर कोई २ ऐसे धर्म्मी मनुष्य थे

जो उस भयानक समय में भी आनन्दित रहे। उन में से एक डफ़ साहिब थे जिन के निकट मरना कुछ भयंकर बात न थी। उन को उस आंधी में भी परमेश्वर के उपस्थित रहने का पूरा निश्चय था और उन के बिचार में स्वर्ग का जो मार्ग सूखी भूमि से है वही मार्ग समुद्र से भी है। इतने में उन्हों ने पुकारके लोगों से कहा कि ऐसा जान पड़ता है कि शीघ्रही ईश्वर के सन्मुख हम सभों को अपने २ कामों का लेखा देना होगा सो अब उचित है कि हम सब एकट्ठे होके ईश्वर से प्रार्थना करें कि यदि उस की इच्छा हो तो हमें अकालमरण से बचावे और जो न इच्छा हो तो अपने सन्मुख बुलाने के लिये सिद्ध करे। यद्यपि वहां लहरों से ढकेले जाने का हर समय भय था तथापि यह सुनके बहुत लोग साहिब के निकट एकट्ठे हुए और साहिब ईश्वर से बिन्ती करने लगे। निश्चय है कि उस अंधियारी भयंकर दशा में उन लोगों ने बड़ी गंभीरता से ईश्वर को पुकारा होगा। इतने में जहाज़ का अधिपति और जहाज़ी लोग एक छोटी डोंगी को खोलने लगे कि जिस पर चढ़के लोग निर्भय बच

निकलें परन्तु प्रचंड वायु और फेनीली लहरों के कारण उस को पानी में ढकेलना बड़ा कठिन काम था पर अंत को उन का अर्थ सिद्ध हुआ अर्थात् उन्हों ने डोंगी को जल में जहाज के इतना निकट ठहराया कि जिस पर वे जो जहाज से समुद्र में गिर पड़ने के भय से कांपते और भयमान थे सवार हो सकें । परन्तु वह डोंगी ऐसी छोटी थी कि उस में केवल उन लोगों में से तिहाई लोग समा सकते थे । यह तो निश्चय है कि जिन्हों ने ईश्वर से प्रार्थना किई थी उन को ईश्वरीय अनुग्रह और शांति प्राप्त हुई होगी क्योंकि उन में ख्रीष्टीय प्रेम और दया का एक अद्भुत लक्षण यह प्रगट हुआ कि स्त्रीरहित पुरुषों ने स्त्रीसहित पुरुषों से पुकारके कहा कि तुम अपनी २ स्त्रियों को साथ लेके डोंगी में जाओ क्योंकि तुम दो २ मनुष्य हो और हम तो अकेले हैं । पतिवाली स्त्रियों ने कहा कि हम अपने पतियों के बिना नहीं जायेंगी परन्तु ईश्वर ने दया करके उन सभों में से एक को भी समुद्र में डूबने न दिया । थोड़ी बेर के उपरान्त वायु बंद हो गई और थोड़े बिलंब में वह डोंगी और एक दूसरी डोंगी

जो उस से छोटी थी दोनों काम में लगाई गईं सो इन दोनों का तीन खेवा करके सब के सब शीत से कांपते और जल से भीगे हुए एक छोटे टापू में पहुंचे। डोंगी की तीसरी खेवा के थोड़ी बेर उपरान्त सूर्य्य का प्रकाश दृष्टि आने लगा। उस समय से पहिले वे लोग उस टापू की व्यवस्था को कुछ न जान सके परन्तु जब भोर हुआ तब वह स्थान निपट सूनसान उन को जान पड़ा। वह तो केवल समुद्र के पत्तियों का स्थान था। यद्यपि वहां केवल दो ही मनुष्य दिखाई पड़े जो पत्तियों के अंडे बटोरने को गये थे तथापि उन्हें देखने से उन बेचारे अंग्रेजों को जिन की सब सामग्री समुद्र में डूब गई थी आनन्द हुआ। विशेष करके वह आनन्द इस कारण से हुआ कि उन दोनों मनुष्यों के निकट भोजन बनाने के लिये एक डेगची थी। फिर जहाज़ के लोगों में से कोई तो कछार की लंबी सूखी घासों को ईंधन के लिये बटोरने को और कोई अंडों के एकट्ठा करने को गये और कोई आग के समीप बैठके अंडों को पकाने लगे। वहां उन अंडों को छोड़ और कुछ भी दूसरे प्रकार का भोजन

हाथ न लगा । डफ साहिब ने उस समय अवश्य पावल प्रेरित की वह दशा स्मरण किई होगी जब कि वह भी समुद्र में डूब जाने के जोखिम में पड़ गये थे और पीछे उस जोखिम से बचके एक टापू में पहुंचाये गये थे । जब साहिब ने अपने को और अपनी प्रिया मेमसाहिब को उस भयंकर रात्रि के जोखिम और संदेह से बचाया हुआ जाना तो उन्हों ने ईश्वर का बड़ा धन्यबाद किया होगा ॥

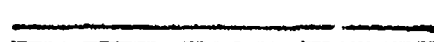
निःसन्देह उस समय उन का सब कुछ नष्ट हो गया था उन के रूपये पुस्तकें और वे स्मारक वस्तु जो उन के प्रिय मित्रों से मिली थीं सब कुछ समुद्र में डूब गईं थीं और केवल दो ही वस्तु उन के पास रह गईं अर्थात एक तो वह वस्तु जिन्हें उस समय वे पहिरे थे और दूसरा वह पूर्ण बिश्वास जो ईश्वर पर रखते थे । यद्यपि उन लोगों की सांसारिक सब सामग्री और उपयोगी वस्तु नष्ट हो गई थी तथापि वे एक दूसरे को प्यार करके और प्रभु पर भरोसा रखके आनन्दित थे ॥

थोड़ी बेर के उपरान्त एक जहाजी मनुष्य हाथ में कुछ वस्तु लिये हुए जिसे लहरों ने टूटे

हुए जहाज़ से टापू के तीर पर पहुंचा दिया था साहिब के पास आया। फिर जब साहिब को यह विदित हुआ कि यह तो ईश्वर के बचन का ग्रंथ और मेरी एक पुरानी ज़बूर की भी पुस्तक है तब उन्हों ने बड़ा आनन्द और आश्चर्य्य किया। यह तो सत्य है कि वे दोनों पुस्तकें जल में पड़ने के कारण कुछ न कुछ बिगड़ गई थीं तथापि धन्यबाद के संग साहिब ने उन्हें ईश्वर का दान जाना। निश्चय है कि उस समय सोने से भरी हुई एक थैली अथवा बहुमूल्य मोतियों की एक माला उन पुस्तकों के आगे उन को तुच्छ और असार जान पड़ी होगी। उन पुस्तकों के मिलने से सब लोगों पर उन का बड़ा प्रभाव हुआ क्योंकि उस प्राप्ति को ईश्वर की ओर से लोगों ने एक संदेश समझा। फिर सब लोगों ने रेत पर घुटने टेके और डफ साहिब ने एक सौ सातवीं ज़बूर को पढ़ा जिस का उपदेश निज करके उन लोगों को शान्तिदायक है जिन्हों ने अपनी बिपत्ति में परमेश्वर को पुकारा और जिन्हें ईश्वर ने दुःखों से छुटकारा दिया॥

बहुत दिन तक उन को उस टापू में रहना पड़ा

परन्तु अंत को एक जहाज़ जो कि केप टाऊन से उन्हें उस टापू से निकालने के लिये भेजा गया था वहां आ पहुंचा । बड़े आनन्द और धन्यबाद के संग वे सब उस पर चढ़के वहां से चले और थोड़े समय के उपरान्त आफ्रिका देश की भूमि में पहुंचे जहां के रहनेहारों ने उन के साथ बड़ा सुब्यवहार किया । वहां वे कई अठवारे लों रहे क्योंकि कलकत्ते की ओर को जानेहारा कोई जहाज़ कुछ दिन तक उस बंदर में नहीं आया था ॥



चौथा अध्याय ।

अंत को पहुंच जाना ॥

उस समय उन को यह आसरा रहा होगा कि अब हम शीघ्र और कुशलता के संग अपने ठहराये हुए स्थान को पहुंचेंगे परन्तु इस के बिपरीत वायु और लहरों ने मानो उन के शत्रु होकर जहाज़ को रोक दिया । उलटी वायु ने जहाज़ को सीधे मार्ग से हटा दिया और आंधी की प्रबलता से वह जहाज़ डूबते २ बड़ी कठिनता से बच गया । वायु और लहरों

से रुक २ चलते २ मई महीने के अंत में वह जहाज़ उस स्थान में पहुंचा जहां एक छोटी डोंगी जो उसे हुगली नदी का मार्ग बताने को आई थी दिखाई पड़ी॥

डफ साहिब हिन्दुस्तान की भूमि देखके बहुत आनन्दित हुए होंगे। यद्यपि सागर टापू की भूमि देखने में सचमुच बहुत कुरूप है तथापि साहिब और मेमसाहिब के निकट उस समय वह अति शोभित जान पड़ी होगी। फिर जब उस टापू के तीर के निकट जहाज़ का लंगर डाला गया उस समय तो समुद्र की बड़ी यात्रा अवश्य समाप्त हो चुकी थी परन्तु समुद्र की नाईं वहां भी बड़े २ जोखिम दिखाई पड़े क्योंकि एकाएक आकाश में बड़ी काली मेघ की घटा दृष्टि आने लगी और किसी जहाज़ी का यह शब्द सुन्ने में आया कि हे साहसी जहाज़ियो आंधी आती है उस के साम्ना करने को तैयार हो रहो। इतने में आंधी बड़ी प्रबलता से जहाज़ पर आ पड़ी। जहाज़ियों ने तीन लंगर जहाज़ से डाले थे परन्तु वायु की प्रबलता के कारण उन से कुछ अर्थ न निकला और जहाज़ खिलौने के समान लहरों पर झोंका खाता था। फिर थोड़ी बेर

के उपरान्त दलदल में बड़े बल से फेंका गया और उस में ऐसा सट गया कि उस के सर्वश टुकड़े २ हो जाने का बड़ा भय बिदित हुआ । उस समय चंद्रमा का प्रकाश न था और बिजली की लपक को छोड़ सकल बस्तुओं पर अत्यन्त अंधकार छाया हुआ था । क्या यह ईश्वर की इच्छा थी कि जिस देश में आने के मनोर्थ से पादरी साहिब ने अपना सब कुछ छोड़ दिया था उस के अति निकट पहुंचके नाश हों । वह रात्रि अत्यन्त भयंकर थी इस कारण जहाज़ के लोग बड़ी चिन्ता में पड़े हुए भोर के प्रकाश को परख रहे थे । अंत को प्रातःकाल हुआ और उस के प्रकाश में उस जोखिम को जिस में वे पड़े थे भली भांति से देख सके ॥

नदी का स्वरूप अति अद्भुत और भयंकर बिदित हुआ । आंधी के बल से जल आकाश की ओर उछलता और सनसनाता हुआ गिरता था । जहां पहिले भूमि दृष्टि आती थी वहां केवल जल दिखाई देता था । परन्तु जहाजियों का निश्चय था कि वह स्थान उथला होगा सो यदि उधर हम पहुंच सकें तो मरण से बचने की कुछ आशा है । फिर उन्हों ने उसी ठौर पर एक

पेड़ को देखके एक जहाजी को उस की ओर भेजा वह तैरके वहां गया और रस्सी का एक सिरा जहाज़ में और दूसरा सिरा उसी पेड़ में उस ने बांध दिया । तब एक डोंगी और उस रस्सी के द्वारा सब लोग पेड़ के पास पहुंचे जहां भूमि पर कमर तक पानी में डूबे हुए खड़े हुए । यों डफ साहिब हिन्दुस्तान में पहुंचे यह उन के समुद्र की बड़ी यात्रा का अंत था । फिर वे भीगे हुए सन्मुख की वायु का साम्ना करते करते कुछ बेर उपरान्त एक गांव में पहुंचे। उन को यह आसरा था कि उस गांव में बिश्राम लेने और बस्त्र सुखाने और भोजन करने का कुछ अवसर मिलेगा परन्तु हाय २ कि वहां के रहनेहारों ने अज्ञानता और निज धर्म्मपक्ष के कारण उन्हें वहां से निकाल दिया । यों हिन्दुस्तान में साहिब को अनादर और अप्रतिष्ठारूपी पहिला फल मिला । अवश्य है कि यह उन के बिश्वास और धीरजता की बड़ी कठिन परीक्षा थी । साहिब आप क्लेश सहके अवश्य कुछ न कुछ घबराये होंगे परन्तु उन के निकट यह बड़ी बिपत्ति थी कि उन की धीरजी और साहसी मेम साहिब को ऐसी कठिन दशा में फंसने पड़ा।

फिर जब वे गांव से निकाले गये तो उन्हों ने एक मन्दिर में जाके शरण लिया और वहां थके मांदे भीगे हुए कुछ विलंब लों ठहरे । जिस समय उस जहाज़ के लोगों की दुर्दशा का संदेश कलकत्ते में पहुंचा तो तुरन्त डोंगियां उसी समय उन्हें उस दुर्दशा से छुड़ाने के लिये भेजी गईं सो एक डोंगी पर साहिब और उन की मेम साहिब सवार होके थोड़े समय के उपरान्त कलकत्ते में पहुंचे। वहां एक दूसरे पादरी साहिब ने उन को अपने घर में बुलाके उन का बड़ा आदरमान और सत्कार किया । इस प्रकार लंडन से कलकत्ते लों पहुंचने में उन का आठ महीने से अधिक समय व्यतीत हो गया ॥

जब कई एक हिन्दुओं ने सुना कि साहिब ने कैसे २ बड़े जोखिमों से छुटकारा पाया है तो कहने लगे कि अवश्य यह देवताओं का कोई प्रिय है और कदाचित् देवता इस के विषय में कोई निज अभिप्राय रखते होंगे । ऐसे दुःखों और क्लेशों के विषय में जो विचार डफ साहिब के थे सो उन की एक चिट्ठी के द्वारा से जिसे उन्हों ने कलकत्ते में पहुंचने के एक दिन पीछे लिखी थी प्रगट होते हैं । उन्हों

ने लिखा कि सांसारिक बिश्राम और धन संपत्ति की हानि कभी २ बड़ा लाभ है अर्थात् जब उस हानि के संग वह बहुमूल्य बस्तु जिस को हम से कोई छीन नहीं सकता प्राप्त होती है। बिना बिजय के बिश्वास कहां और बिना यत्न के विजय कहां। और जब लों कि क्लेश और कठिनता में कोई न पड़े तब लों यत्न करने का अवसर कहां मिल सकता है। ईश्वर से हमारी यह बिन्ती है कि यत्न और दुःख और जोखिम बरन यदि उस की इच्छा हो तो उस के प्रताप और महिमा के प्रगट करने में चाहे मरण भी हमारे बांट में आ पड़े परन्तु अंत को विजय का मुकुट और अनन्तजीवन हमें उन बस्तुओं की संती मिले॥

इस से पहिले डफ साहिब ने अपनी सब पुस्तकों के नष्ट होने के विषय में लिखा था कि यद्यपि वे नष्ट हो गई हैं तथापि ईश्वर का धन्यबाद हो कि मैं बिना शोक और कुड़-कुड़ाहट के इस बड़ी हानि का बिचार कर सकता हूं कि इसी रीति से सकल सांसारिक वस्तु नष्ट होती चली जाती हैं। केवल वही संचय जो स्वर्ग में उपस्थित है अबिनाशी है। ईश्वर

ने मुझ पर अत्यंत कृपा किई है और उस की कृपाओं में से एक यह है कि उस ने मुझे अपने सच्चे सेवक होने को स्वीकार किया है ॥

पांचवां अध्याय ।

काम का आरंभ ।

डफ साहिब हिन्दुस्तान में बिशेष करके एक ऐसी पाठशाला स्थापित करने के लिये भेजे गये थे जिस में ईसाई धर्म्म की शिक्षा दिई जाय । इस काम के पूरा करने में उन को बड़ी कठिनताओं का साम्ना करना पड़ा जिन में से कोई २ बातें अति कठिन थीं परन्तु वे साहिब के अंग्रेज़ मित्रों की ओर से थीं । यह बात इस प्रकार से हुई थी कि बहुतेरे अंग्रेज़ जिन में से कोई २ बड़े बुद्धिमान और धर्म्मी थे यह बिचारते थे कि यद्यपि हिन्दुस्तानी लड़कों को कुछ न कुछ पढ़ाना उचित है तथापि उन की शिक्षा निज हिन्दुस्तान की भाषा में होनी चाहिये । सो बस जो चाहे वह फारसी वा अरबी वा संस्कृत इत्यादि पढ़े परन्तु अंग्रेज़ी भाषा सीखने से उन को क्या लाभ होगा ।

आज कल भी बहुत लोगों का यही विचार है वे चाहते हैं कि हिन्दुस्तानी बालक वेदों की कहानियों अरु और पुस्तकों की बुरी २ कहानियों को पढ़ें परन्तु अंग्रेज़ी भाषा के विषय में यह सोचते हैं कि उस के पढ़ने से बालक केवल घमण्डी ढीठ छली और धर्मरहित हो जाते हैं। परन्तु डफ साहिब का कुछ और ही बिचार था उन्हों ने अंग्रेज़ी भाषा को मानो विद्या के खज़ाने की कुंजी समझी जिसे काम में लाने से वे लोग जो सचमुच विद्या के रसिक हैं संतुष्ट हों। सो बस उन्हों ने राजाराम मोहनराय से संमति पाके अंग्रेज़ी भाषा पढ़ाने का अभिप्राय दृढ़ किया। वह यह नहीं चाहते थे कि पूर्वीय भाषाओं का अनादर करें और उन से लोगों को थोड़ी प्रवीणता हो बरन यह कि पच्छिमी विद्या की कुंजी अंग्रेज़ी भाषा भी हिन्दुस्तानियों को दिई जाय। सचमुच उस समय हिन्दुस्तान के बहुत दुष्ट लोग अंग्रेज़ी भाषा से थोड़ी प्रवीणता प्राप्त करके उसे केवल औरों के धोखा देने के लिये काम में लाते थे परन्तु साहिब ने सोचा कि यद्यपि मेरी पाठशाला के लड़के उस विद्या को प्राप्त

करें तथापि उस का फल यह कभी न हो कि उन्हीं दुष्ट लोगों के समान वे भी हो जांय। यद्यपि किसी २ अंग्रेजी पुस्तक में अधर्म्म और दुष्टता का बिष पाया जाता है तथापि अंग्रेजी भाषा के न पढ़ने के द्वारा हिन्दुस्तान के लोग उस बुराई से कुछ बचे न रहेंगे॥

पाठशाला के आरंभ से पहिले ही डफ साहिब के एक प्रिय मित्र ने जो कि मिशनरी भी था उन के पास आके बिन्ती किई कि अंग्रेजी भाषा के अभ्यास कराने का अभिप्राय आप न कीजिये। परन्तु जब उस मित्र ने देखा कि मेरा सब कहना और बिन्ती निष्फल ठहरती है तो उस ने उठके और डफ साहिब का हाथ पकड़के बड़ी गंभीरता से कहा कि आप के इस काम का केवल यही अंत होगा कि कलकत्ता नगर कपटियों और दुष्टों से भर जायगा। परन्तु इस में कुछ संदेह नहीं कि उस मनुष्य ने बड़ी भूल किई॥

हिन्दुस्तान के लोगों में से डफ साहिब की पाठशाला में पढ़नेहारों से अच्छे और उत्तम कोई न निकले। साहिब ने हिन्द के तरुणों की शिक्षाओं का यों आरंभ किया कि पहिले

शहर के बीचोबीच अपने लिये एक घर लिया । कई एक लोगों ने उन को यह उपदेश दिया कि पाठशाला के लिये पहिले एक बड़ा घर बनवाइये जिस में कि लड़कों को वहां पढ़ने को अधिक इच्छा हो परन्तु उन्हों ने न माना बरन चीतपुर में एक हिन्दू से एक छोटा सा घर भाड़े पर लिया जो कि आरंभ में पढ़नेहारों के लिये बहुत था ॥

साहिब के कलकत्ते में पहुंचने के छः अठवारे के उपरान्त उस घर में पांच तरुण मनुष्य जिन्हें राजाराम मोहनराय ने बुलाया था उपस्थित हुए जिन से एक दोभाषिया के द्वारा वह बातचीत कर सकते थे । कदाचित् और कोई मनुष्य इतने थोड़े लड़के देखके निराश हो जाता परन्तु डफ साहिब ने उस दशा को उत्तम आरंभ समझा । दूसरे दिन पचीस लड़के आये और एक अठवारे के उपरान्त प्रातःकाल को एक सौ पचीस और उसी दिन के सायंकाल को और भी एक सौ पचीस लड़के आये । इस प्रकार उस पाठशाले में अढ़ाई सौ पढ़नेहारे लड़के उपस्थित हुए बरन घर को छोटाई के कारण बहुतेरे उस में भरती होने

से वर्जित किये गये । यों उन्हों ने जिन के विषय में किसी ने कहा है कि यह तो यद्यपि बंगभाषा को नहीं जानते तथापि उन्हों ने उन लोगों को पढ़ाया जो अंगरेजी को नहीं जानते थे बड़े काम की नेव डाली । आरंभ में वह आप ही जो ऐसे बुद्धिमान थे लड़कों को ककहरा इत्यादि पढ़ाने लगे परन्तु उन्हों ने न केवल पुस्तकों ही की विद्या दिई बरन लड़कों को सोचने और पृथक २ बातों में बिशेषता करने की शिक्षा भी दिई और अपनी कृपा और कोमलता के द्वारा उन्हें अपना मित्र बना लिया । बस पाठशाले की वृद्धि बहुत शीघ्र हुई फिर एक दूसरे घर में जो पहिले से बहुत बड़ा था उठाके पाठशाला स्थापित किई गई । एक बरस के उपरान्त लड़कों की परीक्षा सुन्ने को जो लोग आया चाहते थे वे सब आये और अंगरेजी बिद्या और गणितबिद्या और भूगोल-बिद्या में पढ़नेहारों की प्रवीणता को देखके बड़े बिस्मित हुए ॥

उस पाठशाले में पढ़ने की इच्छा लोगों की बढ़ती ही गई और साहिब ने उस दशा का बर्णन यों लिखा है कि बारंबार जब कभी हम बाहर

जाते थे तो लड़के हमारे पीछे हो लिया करते थे और कभी पालकी का द्वार भी खोलके दीनता और आग्रह से पाठशाले में आने की अनुमति मांगते थे परन्तु हम भीड़ के कारण उन्हें आने की अनुमति नहीं दे सके । पाठशाले में इतने लड़के आया चाहते थे कि अंत को निरुपाय होके हम ने उन को जिन के नाम लिखे थे टीकटें दिईं और दो मनुष्य द्वार पर खड़े किये इस निमित्त कि बिना टीकट के कोई भीतर आने न पावे । यों आरंभ में साहिब के परिश्रम पर ईश्वर की आशीष प्रगट हुई ॥

छठवां अध्याय ।

पहिला फल ॥

यह कोई न समझे कि डफ साहिब लड़कों की बुद्धि की प्रबलता और वृद्धि के लिये यत्न करके उन की आत्मिक भलाई में नहीं लगे रहे किन्तु उस में तो वह तनमन से लगे रहते थे क्योंकि बिना उस ज्ञान के कि जिस के अनुसार चलने से मनुष्य अनन्तजीवन में प्रवेशित होता है सांसारिक शिक्षा बहुत ही तुच्छ और व्यर्थ है ॥

फिर साहिब ने जहाज़ के टूट जाने के समय ईश्वरीयज्ञान की अपेक्षा सांसारिक ज्ञान की न्यूनता और तुच्छता को मानो दृष्टान्त के द्वारा से जान लिया था। वह आठ सौ पुस्तकें जिन को अपना निज लाभदायक समझके बड़े यत्न और चौकसी से उन्हों ने एकट्ठा किया था सब खो गई थीं और उन से अधिक वह सब कागज़ भी जिन के लिखने में उन्हों ने प्रयत्न किया था नष्ट हुए परन्तु इस बड़ी हानि के होते ही ईश्वर के बचन की एक पुस्तक हाथ लगी थी इसी प्रकार से जब मरण की आंधी से मनुष्य के प्रयत्न के सकल फल नष्ट हो जायेंगे और बुद्धिमान और अज्ञान दोनों सकल सांसारिक सामग्री से रहित होके ईश्वर के सन्मुख जायेंगे तो उस समय ईश्वर का बचन अटल और निर्दोष बना रहेगा॥

डफ साहिब की पाठशाला के सब लड़के प्रतिदिन सच्चे धर्म्म की शिक्षा पाया करते थे और उन के पितृ लोगों को साहिब की ओर से बुलौआ मिला कि वे धर्म्मपुस्तक के पाठ के समय उपस्थित हुआ करें। एक दिन पहिले करिन्थियों के तेरहवें अध्याय का जिस में

प्रेम का निज बर्णन है पाठ था। पढ़ते समय सब लड़के पाठ पर मन लगाये सावधान बैठे रहे और किसी २ के मुख से प्रगट हुआ कि उन के मनों पर उन बातों से बड़ा प्रभाव होता था। अंत को जब ईश्वरीय प्रेम के उस बर्णन का पिछला वाक्य पढ़ा गया अर्थात् प्रेम सब को सहता है तब एक तरुण जिस ने कई एक दिन पहिले ईश्वर के बचन के पढ़ाये जाने के विषय में बड़ी बिरुद्धता किई थी उठके कहने लगा कि साहिब यह तो हम से नहीं हो सकता है कौन ऐसा प्रेम औरों से रख सकता है॥

फिर एक हिन्दू के मन में उन बातों के पढ़ने से जिन में वे लोग धन्य कहलाते हैं जो अपने शत्रुओं को प्यार करते हैं और उन के लिये प्रार्थना करते हैं बड़ा प्रभाव हुआ। बहुत दिन लों यह बातें उस मनुष्य के सोच बिचार में रहीं और अंत में बहुधा वह आप ही आप यह कहने लगा कि अपने शत्रुओं को प्यार करो और जो स्राप देवें उन के लिये आशीष देओ यह क्या ही उत्तम आज्ञा है॥

डफ साहिब ने जल बरसने की मुख्यता और उस का कारण इस रीति से बतलाया कि उन्हें

निश्चय हो गया कि वह बर्षा इंद्र की और स्वर्गीय हाथी की ओर से नहीं होती है इस लिये उन्हों ने सोचा कि सच्चे ज्ञान के विषय में पहिले हमें ठीक और शुद्ध संदेश नहीं मिला था। पढ़नेहारों में से कई एक के मनों में नई और पुरानी शिक्षाओं का मानो बिवाद हुआ। एक ब्राह्मण ने पाद्री साहिब से कहा कि यदि आप का बर्णन यथार्थ हो तो हम अपने शास्त्रों की शिक्षाओं को क्या समझें शास्त्र तो अवश्य सत्य हैं इस कारण यद्यपि आप की शिक्षा प्रामाणिक विदित होती हैं तथापि वे अवश्य झूठी हैं॥

एक बार जब कि सूर्य्यग्रहण पड़ा तो उस का सत्य कारण बताया गया जिस बर्णन से पढ़नेहारों को बड़ा अचंभा हुआ बरन बहुतेरों ने देखा कि सूर्य्य पर राहु और केतु की चढ़ाई करने की कथा न केवल झूठी ही है बरन निपट बुद्धि के बिरुद्ध भी है। सो उस पाठशाले की चर्चा बहुत शीघ्र ही फैल गई और उस के कारण बहुत लोग घबराहट में पड़े। गुरुओं और ब्राह्मणों ने जिन की प्रतिष्ठा बहुत होती थी जान लिया कि अब हमारे धर्म्म के

स्थापित रहने में अति संदेह है। जिन को गुरु लोग अपने लाभ के लिये अज्ञानता के अंधकार में रखते थे वे अब उस पाठशाला के द्वारा ज्ञान के प्रकाश में आने लगे इस लिये उस पाठशाला के टूट जाने के लिये सम्मति किई और अपना यह उपाय प्रगट किया कि आगे को जो उस पाठशाला में जाके पढ़े वह अपनी जाति से बाहर किया जायगा॥

जिस प्रकार किसी घर के निकट जब उस में कोई छूत का रोग पाया जाता है तब एक पीला झंडा खड़ा करते हैं उसी रीति से पाठशाला के द्वार के सन्मुख एक झंडा खड़ा करने का उपाय किया गया जिस से कि लोग उस जोखिम से अलग रहें॥

पढ़नेहारे अपने गुरु लोगों और बृद्ध लोगों की यह धमकियां सुनके बहुत डर गये और प्रायः सब लड़के पाठशाले में आने से अलग हो गये यहां लों कि जहां तीन सौ लड़के उपस्थित हुआ करते थे वहां केवल पांच छः लड़के रह गये परन्तु शीघ्र ही उन का यह भय जाता रहा और एक अठवारे के बीच में वे लड़के जो भाग गये थे फिर आने लगे और थोड़े ही

दिन में प्रत्येक श्रेणी पहिले से बहुत अधिक हो गई ॥

डफ साहिब ने कलकत्ते में रहने के अपने दूसरे बरस में एक हिन्दू को एक चिट्ठी पाई जिस के पढ़ने से उन का मन अति आनन्दित हुआ होगा अर्थात् बाबू महेशचंद्र घोष ने एक चिट्ठी लिखके जिस में कई एक वाक्य नीचे प्रवेशित थे अपने भाई को दिई और उस ने उसे साहिब के पास भेजा। उस में यह लिखा था कि यदि मेरा भाई मसीही हो जावे तो सच्चा मसीही होगा आप निश्चय जानिये कि उस के मसीही हो जाने से मैं अति प्रसन्न हूं उसे मसीही धर्म्म की सत्यता का स्वीकार करा दीजिये और मैं इस बात में किसी प्रकार से आप की विरुद्धता न करूंगा अधर्म्म के कारण मैं आप यहां लों घबराहट में पड़ा हूं कि मैं नहीं चाहता कि मेरा प्रिय भाई भी उस अज्ञान दशा में पड़ जावे। मैं दयालु कृपालु ईश्वर का अस्वीकार करनेहारा होके अति व्याकुल हुआ हूं और मानो बड़े अंधकार में बैठा हुआ हूं। परन्तु मैं अब ईश्वर का धन्यबाद करता हूं कि इन बातों के बिषय

में मेरे सकल संदेह निवृत्त हो गये हैं बरन मैं धीरे २ आगे बढ़ता हूं और इस समय यह जान पड़ता है कि अंत को मसीही धर्म्म में मेरा मन शांति पावेगा क्योंकि जितना मैं उस के प्रमाणों का बिचार करता हूं उतना ही वह मुझ को ईश्वरीय धर्म्म जान पड़ता है ॥

यह पढ़के पाद्री साहिब ने कैसी प्रसन्नता और कैसा आनन्द और उत्साह के संग ईश्वर से प्रार्थना किई होगी कि उस सत्य के ढूंढनेहारे को किसी प्रकार का झूठा बिश्राम और शांति न मिले जब लों कि वह सच्ची शांति को मसीह पर पूर्ण बिश्वास करने से प्राप्त न करे ॥

थोड़ी बेर के उपरान्त उस साहसी तरुण को ईश्वर ने इतनी बीरता दिई कि प्रभु के आज्ञानुसार बपतिस्मा पाके उस ने अपना बिश्वास सकल लोगों के सन्मुख प्रगट किया। यही पहिला मनुष्य था जिस ने पहिले डफ साहिब के द्वारा मसीही धर्म्म को ग्रहण किया। महेशचंद्र घोष ने आप अपने कर्म्म के छोड़ने और मसीही धर्म्म को ग्रहण करने का बहुत लोगों के सन्मुख साहिब से यों बर्णन किया कि एक बरस के पहिले मैं नास्तिक था अब

मैं मसीही हूं उस समय मैं सब से अधिक व्याकुल था परन्तु अब मैं सकल आनन्दितों में से बड़ा आनन्दित हूं ऐसी उत्तम दशा क्योंकर हुई । बीती हुई बातों को स्मरण करके मैं अचंभित होता हूं जिस समय पहिले मैं आप के व्याख्यानों के सुन्ने को आया उस समय में मैं यथार्थ ज्ञान की खोज में न था बरन मेरी सचमुच इच्छा यह थी कि आप की शिक्षाओं को जिन्हें मैं सर्वथा निर्मूल समझता था झूठा ठहराऊं परन्तु अंत को ऐसी इच्छाओं के होते हो मसीही धर्म्म के सत्यता का स्वीकार हुआ उस के प्रमाण ऐसे थे कि मैं उन्हें खण्डन न कर सका तथापि मेरी बुद्धि के बिचार मेरी इच्छाओं के बिरुद्ध थे अर्थात् यद्यपि मैं ने जान लिया कि मसीह मुक्तिदाता है तथापि मैं मसीही होने को प्रसन्न नहीं होता था । फिर जब मैं ने मनुष्य की दुष्टता और पाप की बुराई के विषय में आप का व्याख्यान सुना तो मेरे बिवेक ने मानो बड़े बल से मुझ पर चढ़ाई किई मेरा मन बहुत ही व्याकुल हुआ और मैं यहां तक शोकित हुआ कि मानो निज घोर नरक ही में कुछ बिलंब लों रहा हूं । फिर जब मैं ने और

भी कुछ सुना तब जान लिया कि ईश्वर के बचन की शिक्षा से मुझे कुछ न कुछ शांति प्राप्त होने लगी जिन बातों को मैं पहिले अप्रमाणिक समझता था वही बातें शीघ्र मेरे निकट सच्ची और प्रमाणिक विदित हुईं। मैं पहिले जिस से अधिक बिरुद्धता रखता था उसी से फिर अधिक प्रेम रखने लगा और अब मैं सब से अधिक उसे प्रिय जानता हूं। निदान मैं अपने पक्षपात के होते ही मसीही हो गया सो अवश्य कोई छिपी शक्ति मेरा उपदेश और सहायता करती थी अर्थात् वह सामर्थ्य जो कि ईश्वर के बचन में ईश्वरीय अनुग्रह कहलाती है॥

सातवां अध्याय।

कुलीन ब्राह्मण॥

बाबू महेशचंद्र घोष बहुत दिन लों अकेले न रहे क्योंकि बाबू कृष्णमोहन बानरजी जो कि अब तक पादरी हैं और जिस को लोग बहुत प्रशंसा करते हैं कलीसिया में संभागी हुए। वह बाबू बड़े बुद्धिमान और बिवेकी मनुष्य थे

इस कारण मसीही होने के पहिले ही हिन्दू-धर्म्म की तुच्छता उन को प्रत्यक्ष प्रगट होती थी इसी हेतु से वह उन लोगों में पड़े रहने से प्रसन्न न थे क्योंकि उन को यह विदित हो गया था कि वह सब बड़े भूल में पड़े हैं। हिन्दू लोग यह बिचारके बाबू से शत्रुता करने लगे कि यह एक अति कुलीन मनुष्य होके अपने हिन्दूधर्म्म की निन्दा करता है यहां लों वे शत्रु हो गये कि उस के भाई बन्धु और कुटुम्बियों के पास जाके धमकाकर कहने लगे कि तुम लोग इस अधर्म्मी को अपने यहां से निकाल देओ और यदि ऐसा न करोगे तो हम तुम्हीं लोगों को जाति से बाहर निकाल देंगे। यह सुनके बाबू बानरजी के कुटुम्बियों ने उन से यह बात प्रगट किई कि यदि तुम अपने अधर्म्म से रहित होने और हिन्दूधर्म्म के मान्ने का स्वीकार न करोगे तो हम तुम्हें घर से निकाल देंगे परन्तु बाबू बानरजी ने मिथ्या की बुराई से प्रतिष्ठा और धन की हानि को अच्छा समझके अपने कई एक मित्रों के संग जिन के बिचार उस के बिचार के समान थे रात्रि के समय आप ही घर से निकल

गये। कुछ समय के उपरान्त अपना वर्णन उन्हों ने यों लिखा कि हम ने अपने घर को जिस में लड़काई से रहे और अपनी माता को जिस की गोद में लड़काई के समय पाले गये और अपने भाइयों को जिन के संग लड़काई से रहे और बहिनों को जिन्हें हम बहुत प्यार करते थे छोड़ दिया॥

बाबू को केवल शोक और क्लेश ही नहीं उठाना पड़ा बरन अति संकटों में भी पड़ना हुआ। जिस समय वह और उन के साथी चले जाते थे उस समय एक ऐसी बड़ी भीड़ ने आ उन्हें घेर लिया कि बड़ी कठिनता से वे उस से छूटे। फिर दूसरे दिन उस बेचारे ब्राह्मण को बड़े बेग से ज्वर आया। उस ने यद्यपि अपना सब कुछ खो दिया था तथापि उस समय लों उस को कुछ प्रतिफल नहीं मिला था। यद्यपि उस ने कृष्ण को छोड़ दिया था तथापि ख्रीष्ट को न पाया था। उस ने आप उस समय के विषय में लिखा है कि मैं ईश्वर से सर्वथा अज्ञान था तथापि वह दयालु कृपालु प्रभु मुझे न भूला॥

डफ साहिब ने उस बाबू की दशा सुनके अपने एक मित्र को उस के पास भेजके उसे अपने

घर पर बुलवा लिया । उस निकाले मनुष्य के लिये वह क्या ही सुभाग्यता हुई जब कि वह मसीही के घर पर आया परन्तु उस भेंट का बर्णन बाबू बानरजी ने जो आप किया है सो सुन्ने के योग्य है ॥

उस ने यों लिखा है कि जब मैं डफ साहिब के निकट पहुंचा तब वह बड़ी कृपा से हमें ग्रहण करके हमारी दशा को पूछने लगे और हमारे विषय में अपने बिचार हम पर साफ २ प्रगट करने लगे जिस से विदित हुआ कि यद्यपि कई एक बिचार और कामों से वह आनन्दित थे तथापि हमारी और बातों के कारण अति शोक करते थे । वह इस से तो प्रसन्न थे कि हम ने झूठ इत्यादि की बिरुद्धता किई परन्तु इस पर शोक करते थे कि हम जो सत्यता से अज्ञान रहते थे । उस के उत्तर में मैं ने उन से कहा कि मसीही न होना हमारा अपराध नहीं है क्योंकि हम सचमुच उस धर्म्म को सत्य नहीं मानते और इसी कारण उसे सत्य मान्ने का स्वीकार नहीं कर सकते । फिर साहिब ने बड़ी कोमलता और गंभीरता से कहा कि यह तो सत्य है कि जब लों तुम

मसीही धर्म्म से अज्ञान हो तब लों उसे न मान्ना तुम्हारा अपराध नहीं है परन्तु तुम्हारा यह अवश्य अपराध है कि तुम उस धर्म्म की शिक्षा और प्रमाणों को निर्णय नहीं करते हो। पाद्री साहिब के इस बचन से मुझ पर यहां लों प्रभाव हुआ कि मैं और मेरे मित्रों ने उन की कोठी पर धर्म्म के विषय बातचीत करने के लिये अठवारे में एक बार आने की अनुमति मांगी॥

फिर बाबू के लोगों ने उन्हें यहां लों सताया कि उन को अंगरेज़ों में जाके रहना पड़ा क्योंकि किसी हिन्दू में इतना साहस न था कि उन्हें अपने घर में शरण दे। इस के उपरान्त वह बिष के भयंकर मृत्यु से बड़ी कठिनता से बच गये क्योंकि कई एक हिन्दू लोग जो उसे हरा न सकते थे नाश करने को उपस्थित हुए परन्तु इस प्रबंध के होते ही उस तरुण ने खोज करते २ अंत में सत्यता को प्राप्त किया॥

फिर उस ने चाहा कि पाद्री साहिब के घर पर जहां उस ने मसीही धर्म्म की शिक्षा पाई थी अपने हिन्दू मित्रों के सन्मुख बपतिस्मा लेवे। जब वह बपतिस्मा पाने के लिये उपस्थित

हुए तो डफ साहिब ने उस से इस रीति पर प्रश्न किया ॥

१ क्या तुम हिन्दूधर्म्म की मूर्त्तों की शिक्षाओं और रीतों को त्यागते हो। उस ने उत्तर दिया कि हां और ईश्वर से मैं बिन्ती करता हूं कि वह मेरे स्वदेशियों को भी यही काम करने को सिद्ध करे ॥

२ क्या तुम ईश्वर पिता को जो सभों का उत्पन्न करनेहारा और यसू मसीह को अपना मुक्तिदाता और उस के बलिदान को मुक्ति का अकेला द्वार और पवित्रात्मा को मनुष्य के मन का पवित्र करनेहारा स्वीकार करते हो। उस ने बड़े उत्साह से उत्तर दिया कि हां और ईश्वर मुझे अपनी इच्छा पूरी करने को अनुग्रह करे ॥

इस के उपरान्त उसे पिता पुत्र पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दिया गया और सभा के सब लोगों ने घुटने टेकके ईश्वर की निज आशीष चाही। यों कलकत्ता में डफ साहिब के परिश्रम के फल का दूसरा पुंज मिला ॥

आठवां अध्याय ।

एक परधर्म्मी का वर्णन ॥

पर उन सकल तरुणों का वर्णन यहां करना अन्होना है जिन्हें कि डफ साहिब ने सोच करने की रीति फिर प्रार्थना करने की रीति और फिर ख्रीष्ट के हेतु अपना सब कुछ छोड़ देने का सिखाया था। उन का एक उत्तम दल था जिन में से कई एक आज लों जीते हैं और कलकत्ते से पंजाब लों बड़े २ अधिकारों पर उपस्थित हैं। अपने प्रिय गुरु की नाईं बहुतेरे स्वर्ग के पवित्र जनों में संभागी हुए परन्तु एक परधर्माश्रित का वृत्तान्त वर्णन करने के योग्य विदित होता है इस कारण उसे हम लिख देते हैं ॥

एक दिन सवेरे गोपीनाथ नन्दी नाम एक मनुष्य डफ साहिब के बैठक में आया और आंसू भर भरके कहने लगा कि क्या मुझे अनन्त-जीवन मिल सकता है। फिर उस ने कहा कि आप के एक व्याख्यान सुन्ने के कारण मेरे मन में ऐसा प्रभाव हुआ कि मैं बाबू बानरजी के पास बार्तालाप करने को गया और उस ने मेरे

संग ईश्वर से प्रार्थना करके मुझे आप के पास भेजा है। इस के उपरान्त गोपीनाथ नन्दी को दूसरे हिन्दुओं और मुसलमानों के समान जो खीष्ट को ग्रहण करके और अपना क्रूस उठाके प्रभु के पीछे हो लेते हैं अति क्लेश उठाना पड़ा। उस के संबन्धी और हित मित्र और कुटुम्बों ने उस की बिन्तियां किईं और फिर उस को भांति २ की गालियां भी दिईं और जब कुछ बन न पड़ा तो उसे घर से भी निकाल दिया। जब जाते समय उस ने अपनी प्रिय माता को शोक और मोह के कारण बिलाप करते सुना तो उसे बहुत ही शोक हुआ। यद्यपि वह असमर्थ होके रोने लगा तथापि ईश्वर ने उसे यहां लों सामर्थ्य दिया कि वह यह कहता हुआ कि मैं नहीं ठहर सकता हूं चला गया। वह जानता था कि खीष्ट ने कहा है जो कोई माता पिता को मुझ से अधिक चाहता है सो मेरे योग्य नहीं है। इस वृत्तान्त के प्रायः पचीस बरस के उपरान्त गोपीनाथ नन्दी जो पाद्री हो गये थे इस से भी कठिन क्लेश और परीक्षा में पड़ गये परन्तु उसी ईश्वरीय अनुग्रह ने जिस ने पहिले उन को

सहायता किई थी उस समय भी उन्हें संभाला। सन १८५७ ईस्वी में अर्थात् बलवा के समय वह अति क्लेश और जोखिम में कुछ बिलम्ब लों पड़के बड़ी कठिनता से मृत्यु से बचे॥

उस समय वह फतेपुर शहर की मण्डली के धर्म्मोपदेशक थे। यह वही शहर है जहां वह साहसी और धर्म्मी जज्ज टक्कर साहिब अपने स्थान पर अकेला रहके और खीष्ट पर भरोसा रखके जिस के विषय में उन्हों ने एक बेर कहा था कि यदि मेरे शिर का एक २ बाल जीवन होता तो मैं प्रभु यसू मसीह के हेतु उन सभों को छोड़ देना तुच्छ और निकम्मा समझता मार डाले गये। उसी अनुग्रह ने जिस के कारण टक्कर साहिब मरण लों दृढ़ रहे उन के प्रिय मसीही भाई को विजय दिई॥

उन क्लेशों और जोखिमों का जिन में पाद्री गोपीनाथ उस समय पड़े जब कि अपनी स्त्री पुत्रादिकों के संग प्राणघातकों से भागे और पकड़े जाके उन की निर्दयता से बन्दीगृह में डाले गये थे जो वर्णन उन्हों ने आप किया उसे संक्षेप करके हम लिखते हैं। अर्थात्

उन्हों ने कहा कि हम सवेरे नौ बजे लों

भागते रहे परन्तु उस समय जब हम और हमारे छोटे बालक थके मांदे होके एक पेड़ की छाया में बैठे और बेचारे लड़के भूख के कारण बहुत रोये तब हम ने ईश्वर से जिस ने बन में अपने लोगों को मन्न से अर्थात् स्वर्गीय रोटी से संतुष्ट किया प्रार्थना किई और अवश्य उस ने सुनी क्योंकि उसी समय एक बरात कुछ दूर पर दृष्टि आई। मैं उन लोगों के पास गया और उन्हों ने मुझे पांच पैसे दिये जिन्हें लेके मैं ने थोड़ा सा सत्तू और गुड़ मोल लेके अपने बेचारे बच्चों को भोजन कराया ॥

पादरी साहिब ने उन पैसों को बड़े धन्यबाद के संग लिया होगा। उस रात को उन्हों ने एक कृपालु हिन्दू के घर में शरण लिया और फिर प्रातःकाल के समय प्रयाग नगर की ओर बिदा हुए जहां कि बड़ा लोहूलुहान और मनुष्य बध हो रहा था ॥

वहां की दशा का वर्णन उन्हों ने यों किया कि इलाहाबाद में पहुंचके हम ने बड़े शोक के संग देखा कि विलायती पादरियों का बंगला जल गया है और शत्रुओं ने वहां के सुन्दर गिरजाघर को ढा दिया है।

हमारे पहुंचते ही मुसलमानों ने हमें आ घेरा परन्तु हमारे दयालु स्वर्गीय पिता ने फिर रक्षा किई अर्थात् एक हिन्दू सोनार ने अपने घर में हमें शरण दिया परन्तु संध्या समय हम ने जब उस घर को छोड़ा तो मुसलमानों ने हमें पकड़ लिया और जब विदित हुआ कि उन से बचने का कुछ आसरा नहीं है और वे हमारे मार डालने को सिद्ध हैं तो हम ने उन से बिन्ती किई कि हमें उस मोलवी के पास जो कई दिन लों राजद्रोहियों का अध्यक्ष था पहुंचा देओ। जब उस के सन्मुख हम पहुंचाये गये तब हम ने उसे चौकी पर बैठे और उस की चारों ओर मनुष्यों को खड्ग लिये हुए देखा। जब हम ने उसे सलाम किया तब उस से और हम से यह बातें हुईं। उस ने पूछा तुम कौन हो। मैं ने कहा मसीही। फिर उस ने पूछा कि तुम कहां से आये हो। मैं ने कहा फतेपुर से। फिर उस ने पूछा तुम्हारा क्या पेशा है। मैं ने कहा मसीही धर्म्म की शिक्षा देना। फिर उस ने पूछा क्या तुम पादरी हो। मैं ने कहा जी हां। फिर उस ने प्रश्न किया कि क्या तुम वही हो जो धर्म्मपुस्तक सुनाते और पत्रिका बांटते

थे। मैं ने उत्तर दिया हां मैं और मेरे साथी यही काम किया करते थे। फिर उस ने पूछा तुम ने कितने लोगों को मसीही किया है। मैं ने कहा मैं ने तो एक को भी मसीही नहीं किया है क्योंकि कोई मनुष्य किसी दूसरे के मन को बदल नहीं सकता परन्तु मेरे द्वारा ईश्वर ने प्रायः पचीस मनुष्यों को सच्चे धर्म्म का प्रबोध दिया है। यह सुनके मौलवी ने क्रोधित होकर कहा कि यह मनुष्य भयंकर मृत्यु के योग्य है हम इस के हाथ कान नाक कटवावेंगे और इस के स्त्री पुत्रादिकों को दास दासी बनावेंगे। इस के पीछे न जाने उस के मन में कुछ दया आ गई तो क्या उस ने फिर यह बात कही कि यदि तुम मुसलमान हो जाओ तो हम न केवल तुम्हें छुटकारा बरन तुम्हारी बृद्धि भी करेंगे। गोपीनाथ ने उत्तर दिया कि उस से तो मरना ही उत्तम है। इस के पीछे मौलवी ने पादरी को उस के स्त्री पुत्रादिकों के संग बन्दीगृह में भेजा और कहा कि तुम्हें तीन दिन लों सोच बिचार करने का अवसर मिलता है। उस बन्दीगृह में एक अंगरेजी घराना और कई एक देशी मसीही थे। जब वे

सब एकट्ठे हुए तो अपने २ क्लेशों का वृत्तान्त सुनाके ईश्वर से प्रार्थना करने लगे इतने में एक सिपाही ने आके पाद्री गोपीनाथ की पीठ पर एक लठ मारा और कहा कि तुम लोग मुसलमानों की रीति के अनुसार प्रार्थना करो अथवा चुप रहो॥

दूसरे दिन एक चीक नामे अंग्रेज जो कि बैरियों के हाथ से बहुत घायल हुए थे उसी बन्दीगृह में डाले गये। गोपीनाथ ने जहां लों हो सका उस की सेवा किई और इसी कारण से बन्दीगृह के दारोगा ने क्रोधित होके उन को काठ में ठोंकवा दिया। उस के थोड़ी बेर उपरान्त कई मुसलमानों ने आके उन को इस नियम पर छुटकारा दिलवाने की बाचा दिई कि वे मसीही धर्म्म का त्याग करें। इस पर उस अंग्रेज ने जो मृत्यु के निकट विदित होता था पुकारा कि हे पाद्री साहिब दृढ़ रहो और अपना धर्म्म न छोड़ो॥

यद्यपि उस समय गोपीनाथ ने अपनी प्रिया पत्नी को मार खाते और घूंघट उठाके मुख पर घाव देखा तथापि ईश्वर के अनुग्रह से वह स्थिर चित्त रहे। निदान ठहराये हुए वे तीनों

दिन बीत गये परमेश्वर ने मोलवी को उस की धमकी पूरी करने और उन साहसी बंधुओं के मार डालने से रोक रखा बरन चौथा और पांचवां भी दिन बीत गया और उन की दशा ज्यों की त्यों रही ॥

छठवें दिन मोलवी ने बन्दीगृह में आप आके गोपीनाथ से ठट्ठा करके पूछा कि क्या तुम आनन्दित हो। पादरी ने कहा मैं क्योंकर आनन्दित हूं जब कि मेरे पांव काठ में ठुके हैं परन्तु जो कुछ ईश्वर की इच्छा है उस से आनन्दित हूं। इस के परे उन्हों ने उस उपद्रवी से यह भी कहा कि तुम हमारे निर्दोषी बालकों पर क्यों ऐसी निर्दयता करते हो कि उसे थोड़ा सा दूध भी न मिला। गोपीनाथ के निकट सब से अधिक क्लेश यह रहा होगा कि उन के स्त्री पुत्रादिकों को ऐसा दुःख पहुंचा। परन्तु उन्हों ने थोड़ी बेर उपरान्त उन कष्टों से छुटकारा पाया क्योंकि गोरों और सिक्खों ने आके राजद्रोहियों से कठिन लड़ाई करके उन्हें भगा दिया तब गोपीनाथ और उन के प्रियों ने छुटकारा पाया। उन को इस बात से कैसा आनन्द हुआ होगा कि सर्वशक्तिमान

ईश्वर ने हमें छुटकारा दिया और उन कष्टों के बोच में हमें ऐसी सामर्थ्य दिई कि हम ने अपने बिश्वास को न त्यागा । उन्हों ने कैसे उत्साह से उस का धन्यबाद किया होगा जिस ने उन्हें मृत्यु की छाया की कंदरा से निकालकर आनन्द और छुटकारे की दशा में प्रवेशित किया ॥

पाद्री गोपीनाथ ने बलवे के उपरान्त फतेपुर की मण्डली के लोगों को एकट्ठा किया परन्तु थोड़े समय के पीछे वह और उन की प्रिया स्त्री दोनों उस स्वर्गीय राजा के सन्मुख में बुलाये गये जिस की सेवा उन्हों ने इस संसार में ऐसे उत्साह और सत्यशीलता से किई थी ॥

डफ साहिब को उस मनुष्य के काम अति आनन्द के कारण हुए होंगे जो कि प्रायः तीस बर्ष पहिले सच्चाई का खोजी होके उन के निकट यह पूछने को आया था कि क्या यह हो सकता है कि मैं मुक्तिपदार्थ प्राप्त करूं ॥



नवां अध्याय ।

अपने देश को जाना ॥

डफ साहिब जिस समय हिन्दुस्तान में आये तो अति बलवन्त और भले चंगे मनुष्य थे परन्तु यहां परिश्रम की कठिनता और गर्मी की आधिक्यता के कारण वह अति शीघ्र ऐसे रोगी हो गये कि उन के मित्र उन को मृत्यु के निकट समझने लगे। पहिले ज्वर ने उन्हें निर्बल कर दिया परन्तु कुछ समय के उपरान्त रोग से छूटके फिर अपना काम करने लगे। यद्यपि अपने साहस के कारण माना वह ज्वर और निर्बलता से बड़ी लड़ाई करते रहे तथापि जब कि उन को फिर ज्वर और आमातिसार यह दोनों रोग हुए तब वह निपट निर्बल हो गये। एक चतुर और अति प्रवीण बैद्य बुलाया गया जिस ने साहिब की दशा देखकर कहा कि आप का निरोग होना अति कठिन विदित होता है। परन्तु साहिब कई एक दिन के पीछे ऐसे अच्छे हो गये कि उन के मित्र उन को एक जहाज पर पहुंचा सके॥

साहिब अपने काम को छोड़ने के कारण

बहुत घबरा गये और बैद्य से कहा कि समुद्र-यात्रा करने की अनुमति मिले परन्तु कृपा करके मुझे इंगलिस्तान लों न भेजिये क्योंकि मैं ने अपने को हिन्दुस्तान में ईश्वर की सेवा करने के लिये अर्पण किया है। बैद्य ने उत्तर दिया कि बहुत लोगों की अपेक्षा जिन्हों ने यहां अपना सकल जीवन बिताया है आप चार ही बरस में इस देश के निज रोगों से अधिक क्लेश उठा चुके हैं अब आप को यहां से तुरन्त बिदा होना उचित है॥

बस चार बरस लों कठिन परिश्रम करके और उस परिश्रम के भले परिणाम देखके डफ साहिब हिन्दुस्तान से बिदा हुए। हिन्द देश के विषय में अपनी यात्रा के उपरान्त उन्हों ने यह लिखा कि जहां कहीं मैं जाता वा रहता मेरा मन हिन्दुस्तान के रहनेहारों पर प्रेम और उन की सच्ची भलाई की इच्छा करता रहता है। उस बरस की पचीसवीं दिसम्बर को डफ साहिब अपनी स्त्री पुत्रादिकों के संग स्काटलेण्ड में पहुंचे। समुद्र की यात्रा से उन के शरीर को बहुत गुण हुआ और स्काटलेण्ड के अच्छे शीतोष्णमान ने शीघ्र

उन्हें मानो नया जीवन दिया परन्तु जो कुछ बल उन्हें प्राप्त हुआ सो उन के निज काम की भलाई और लाभ के लिये व्यय हुआ ॥

यद्यपि वह हिन्दुस्तान में न रह सके तथापि हिन्दुस्तान की भलाई के लिये अपने देश में रहके भी यत्न कर सकते थे इस लिये वह न केवल स्काटलेण्ड के बरन हिन्दुस्तान के मसीहियों को हिन्दुस्तान के रहनेवालों के पास सुसमाचार पहुंचाने के लिये अधिक रुपये देने और अधिक परिश्रम करने और ईश्वर से अधिक प्रार्थना करने को सिखाने लगे। वह केवल अपने अद्भुत उत्साह के कारण ऐसे परिश्रम को सहन कर सके। शीत और उष्णता दोनों में उन्हों ने चारों ओर यात्रा करके सैकड़ों सभाओं के सन्मुख हिन्दुस्तान के लोगों का बर्णन और उन के यहां सुसमाचार के पहुंचाने के प्रयोजन का बर्णन अति बचन की प्रवीणता से किया। दो बार वह लण्डन शहर और इंगलिस्तान के और बड़े २ शहरों में गये। कभी २ जब परिश्रम की अधिकाई से उन का शरीर खेदित हो जाता था तब वह अपने पलंग से कठिनता से उठकर बड़ी २ सभाओं

के सन्मुख बड़े २ व्याख्यान किया करते थे। एक समय जब एक सभा के सन्मुख व्याख्यान करने लगे ता पहिले ही बिदित हुआ कि निर्बलता के कारण यह दाहो चार बातें कह सकेंगे और वह आप भी जानते थे कि सुन्नेहारे मेरी निर्बलता देखके मेरी ओर बड़ी कृपादृष्टि के संग देख रहे हैं। पर पीछे से विदित हुआ कि वे सब लाग यों विचार करते थे कि यह अवश्य भूमि पर गिर पड़ेंगे। परन्तु उस समय ईश्वर ने अपने थके और पीड़ित दास को बोलने को निज सामर्थ्य दिई। यद्यपि अंत में उन का शब्द यहां लों धीमा हो गया कि कठिनता से उन की फुसफुसाहट लागों के सुन्ने में आई तथापि उस व्याख्यान का अति अद्भुत प्रभाव हुआ उसे सुनके बलवन्त पुरुष भी आंसू बहाने लगे। अधिक लाग जो उस के पहिले हिन्दुस्तान के लोगों का कुछ सोच न करते और उन के बैकुंठ अथवा घोर-नरक में जाने की कुछ चिन्ता न करते थे वे भी उस समय से तनमन से उन बेचारों के बचाने का यत्न करने का सिद्ध हुए। धनवानों ने बहुत रुपैये दिये और दरिद्रों ने भी अपनी

पूंजी में से दिया बरन छोटे २ लड़के लड़कियां भी अपने पैसे साहिब के पास लाये ॥

एक मेमसाहिब ने जिस ने प्रभुभोज के समय डफ साहिब को व्याख्यान करते देखा उन का यों बर्णन किया है कि वह मृतकों में से एक की नाईं विदित हुए जो कि जी उठा है और वह इस रीति निर्बल और रोगी थे कि जिस समय प्रभुभोज की रोटी तोड़ते थे यदि उन का आत्मा देह को त्याग देता तो कुछ आश्चर्य्य न होता ॥

बिदित हो कि साहिब अपने देश में रहने से आनन्दित न थे। यद्यपि बारंबार उन को ऐसे अवसर मिले कि बड़े बिश्राम के संग अपने प्रिय स्काटलेण्ड देश में रहें तथापि उन्हों ने इस बात को प्रसन्न न किया। इस से कोई यह बिचार न करे कि वह अपने देश को प्रिय नहीं समझते थे बरन वह उसे बहुत प्यार करते थे क्योंकि उन्हों ने एक बार यह कहा कि यदि मैं अपने शारीरिक बिश्राम की चिन्ता करता तो मैं स्काटलेण्ड के सब से ठंढे पहाड़ की सब से छोटी झोंपड़ी को जिस में सर्वथा अति मोटा भोजन मिलता है बंगाल के

सर्वोत्तम घर से अत्यन्त श्रेष्ठ और मनभावन समझता। हां मैं हिन्दुस्तान को फिर जाऊंगा सो उस का कारण यह नहीं है कि मैं अपने देश को प्रसन्न नहीं करता बरन उस का कारण यह है कि ईश्वर के अनुग्रह ने मुझे ईश्वर पिता और मेरे मुक्तिदाता की प्रशंसा महिमा प्रगट करने के काम को अधिक प्रिय जान्ने को सिखाया॥

जिस समय उन का शरीर फिर निरोग हुआ उसी समय उन्हों ने अपनी प्रिया स्त्री के संग फिर समुद्रयात्रा करने का उपाय किया। उस समय उन का बिदा होना अति कठिन और अति क्लेशदायक था क्योंकि उन्हों ने अपने प्यारे बालकों को वहां ही छोड़ दिया जिन्हें ग्यारह बरस लों फिर न देखा बरन उसी बीच में उन में से एक मर भी गया। अपने बिदा होने के पहिले जब साहिब व्याख्यान करते थे तो सभा के सकल लोग उन की मनोद्रावक बातें सुनके आंसू भर भरके रोने लगे। यहां पर उस समय की यात्रा का पूरा बर्णन करने का कुछ प्रयोजन नहीं है केवल इतना ही कहना मुख्य है कि इस यात्रा में भी बहुत बेर लगी

और कलकत्ते में पहुंचने से पहिले आंधी उन के जहाज़ पर आई और बारह घंटे लों वायु बड़ी प्रचंडता से उस पर झोंके मारता रहा। परन्तु अंत को इस जोखिम से बचके डफ साहिब और उन की मेमसाहिब दूसरी बार हिन्दुस्तानियों की भलाई के लिये अपने काम में फिर उपस्थित होने के लिये कलकत्ते में पहुंचे ॥

दसवां अध्याय ।

बलवा और धमकियां ॥

जिस रीति से बरगद का पेड़ अपनी जटा के भूमि में प्रवेश होने और उस के पेड़ हो जाने से फैलता है उसी रीति वह काम जिस की नेव डफ साहिब ने डाली थी बढ़ता गया यहां लों कि उन की चालीस बरस की अवस्था से पहिले ही उसी मिशन के अधिकार में तीन कालेज और बहुत पाठशाला स्थापित हुईं ॥

अवश्य पढ़नेवाले तो उन में अधिक उपस्थित थे परन्तु उन में ऐसे साहसी और धर्म्मी भी बहुत थे जो उस बिश्वास का जो कि उन

के मनें में उत्पन्न हुआ था सभों के सन्मुख स्वीकार करें। उन कई लोगों में से जिन्हों ने ऐसा किया एक उमेशचंद्र सरकार नाम मनुष्य था। पाठशाला में ईश्वर के वचन की शिक्षा पाने से उस के मन में बड़ा प्रभाव हुआ परन्तु उस के मित्रों को जब यह बात विदित हुई तो वे बड़ी घबराहट में पड़े और उस को नास्तिकों की पुस्तकों के पढ़ने का उपदेश दिया क्योंकि वे ख्रीष्टीय होने से नास्तिक होने को भला समझते थे और यह चाहते थे कि आत्मिक आंखें नास्तिकों की शिक्षा से अंधी किई जायें परन्तु यह न हो कि किसी प्रकार से वे मुक्ति-दाता की ओर लगें। इस पर भी जो कुछ उमेशचंद्र ने उन पुस्तकों में देखा उन बातों से वह ख्रीष्टीय धर्म्म का अधिक माननेवाला हुआ। वह केवल सोलह बरस का लड़का था और उस की स्त्री की अवस्था जिसे वह ख्रीष्टीय धर्म्म के अंगीकार करने की आशा रखता था केवल दस बरस की थी। दस बरस लों वे दोनों रात के समय जब और लोग सो जाते थे तब ईश्वर का वचन पढ़ा करते थे। ईश्वर के दूत उस लड़के को जिस का मन ख्रीष्ट के प्रेम से भरा

हुआ था अपनी प्रिया स्त्री को ख्रीष्ट की ओर जो मार्ग और सच्चाई और जीवन है सैन करते हुए देखके अति आनन्दित हुए होंगे। ईश्वर के अनुग्रह से उस लड़की के मन में यहां लों बड़ा प्रभाव हुआ कि वह अपने पति के समान बिश्वासिन हो गई॥

कुछ समय के उपरान्त उमेशचंद्र ने अपनी स्त्री को वह अद्भुत पुस्तक जिस का नाम याचास्वप्नोदय है दिई। वह लड़की उसे पढ़ते २ उस का अर्थ अच्छी रीति से समझने लगी। जब बिनाश नगर से ख्रीष्टियान के निकल भागने का वृत्तान्त पढ़ा तो उस ने कहा क्या यही गति हमारी भी है क्या हम बिनाश नगर में नहीं ठहरे हैं। क्या हमें अवश्य नहीं कि उस ख्रीष्टयान की नाईं अपना सब कुछ छोड़के अपने प्राणों की रक्षा के लिये भागें। विदित होता है कि उमेशचंद्र को यहां लों बल प्राप्त हुआ कि वह केवल उस समय से अपने बिश्वास के कारण सब कुछ छोड़ने को उपस्थित हुआ। फिर कई एक दिन पीछे हिन्दुओं के एक तेवहार के दिन उस को घर से निकल भागने का अवसर मिला। वह इतवार के दिन की सांझ

थी और डफ साहिब अपने तरुणों के संग प्रार्थना करने का समाज करके अपने बैठक में गये। उस समय वह अति ब्याकुल और अति चिन्ता में पड़े थे इस कारण कि उन के काम के बिरुद्ध अधिक कठिनतायें आ पड़ी थीं। सब से सच्चे और बिश्वासी मसीहियों के जीवन में ऐसे काल कभी २ होते हैं जब कि बिरुद्ध बातें उन के बिश्वास की कठिन परीक्षा करती हैं॥

उस सांझ को साहिब अपने मन में सोचते थे कि ईश्वर कब और किस रीति से अपना पराक्रम प्रगट करके अपने लोगों को उन के क्लेशों से छुटावेगा। इतने में बाबू उमेशचंद्र और उस की स्त्री और जगदीश्वर नाम एक परधर्म्माश्रित मनुष्य जिस ने उन दोनों को घर से भागने में सहायता दिई आ पहुंचे। उन लोगों को देखके पाद्री साहिब तुरन्त शोक की दशा से निकलके अति आनन्द में प्रविष्ट हुए और बोल उठे कि ईश्वर का धन्यबाद। परन्तु उमेशचंद्र के इस काम के कारण एक बड़ा बलवा नगर में उत्पन्न हुआ। उस का पिता जो एक बड़े धनाढ्य मनुष्य का खज़ानची था सो न केवल धर्म्म में तत्पर था बरन लोग उस को

और २ बातें भी मानते थे। सो उस बंश के लोगें ने अपने बहुत मित्रों के संग पाद्री साहिब के बंगले के जहां उमेशचंद्र और उस की स्त्री ने रक्षा पाई थी घेर लिया और अति क्रोधित होके उन दोनों के वहां से बरियाई से निकालने का अभिप्राय किया। परन्तु पाद्री साहिब ने अपने घर के किवाड़ बंद कर लिये इस कारण लोगें ने अपने अभिप्राय के यथाशक्ति प्राप्त करने से निराश होके अपने २ उपाय के बदल डाला अर्थात् कचहरी में जाके नालिश किई। वहां उमेशचंद्र के पिता ने यह झूठी साक्षी दिई कि मेरे पुत्र की अवस्था केवल चैादह बरस की है और डफ साहिब बरियाई से उसे अपने घर में रखते हैं। वाह २ वह धर्म्म कैसा है जिस के सहारा के लिये ऐसा झूठ बोलना अवश्य है। फिर जिस समय जज्ज साहिब ने सब बातें भली भांति से निर्णय किईं तो प्रगट हुआ कि लड़के की अवस्था सचमुच अठारह बरस से कम नहीं है इस लिये मुक़द्दमा ख़ारिज किया गया और थोड़े दिन के पीछे उमेशचंद्र और उस की स्त्री का बपतिस्मा हुआ॥

यह दोनों तरुण मसीही याची जिन्हों ने यों

स्वर्गीय स्थान की ओर यात्रा का आरंभ किया पहिला नमूना हुए कि स्त्री पुरुष दोनों एक ही समय हिन्दूधर्म्म को छोड़के मसीही हो गये। कुछ समय बीता कि वह मसीही मर गया परन्तु वह मसीहिन आज लों जीती है और हिन्दू लड़कियों को मुक्ति के मार्ग के बताने में उपस्थित रहती है। ईश्वर करे कि जिस रीति वह दोनों नाश नगर से भाग निकले उसी रीति से और भी बहुत से लड़के लड़कियां उस की शिक्षा के द्वारा से स्वर्गीय दौड़ के दौड़ने को उपस्थित हो जायें॥

इन बातों का जिन का बर्णन ऊपर हुआ है एक अठवारा के उपरान्त दूसरा उपद्रव उठा। उस का कारण यह हुआ कि एक मनुष्य बैकुंठ-नाथदे नाम ने ख्रीष्ट पर बिश्वास करने को स्वीकार किया। पहिले उस ने डाक्टर स्मिथ साहिब के बंगले में रक्षा पाई परन्तु जब एक दिन पादरी साहिब कहीं बाहर गये थे तो लोग बेचारे बैकुंठ को बरियाई से निकाल ले गये और उस के किसी कुटुम्बी के घर में पहुंचाके उस के हाथ में हथकड़ियां पांव में बेड़ियां डाल दिईं। इस के पीछे उस के कुटुम्बी यहां

लों दुष्ट थे कि उन्हों ने उसे बुराई और दुष्टता के भागी करने का अभिप्राय किया क्योंकि उन्हों ने यह बिचारा कि यदि हम उस को किसी रीति से निपट दुष्ट और पामर बना दें तो वह ख्रीष्टीय न हो सकेगा । जब लों निर्दोष ख्रीष्टीय धर्म्म के ग्रहण करने के कारण अपने कुटुम्बियों से बैकुंठनाथ की अप्रतिष्ठा न हुई तब लों वे लोग उस के अनन्तनाश की कुछ चिन्ता नहीं करते थे ॥

सो उन दुष्टों के उपायों के होते ही ईश्वर ने उस बालक को उन सकल परीक्षाओं पर जो मनुष्य और दुष्टात्मा दोनों उस के नाश के लिये कर सकते थे विजय पाने की शक्ति और अनुग्रह दिया और उसे न केवल परीक्षा से बरन बेड़ियों से छुटाया क्योंकि जब उस के बंधुआई की दशा सरकार को विदित हुई तो सरकार ने उस के सतानेहारों को यह आज्ञा दिई कि वे उसे स्वतंत्र छोड़ देवें । आज-कल वही पाद्री बैकुंठनाथदे सुसमाचार का प्रचार कर रहे हैं ॥

उस समय से हिन्दुओं ने ख्रीष्टीय शिक्षा को शहर से दूर करने का अति अधिक यत्न

किया और उन के यत्न आरंभ में किसी रीति से सिद्ध भी हुए क्योंकि डफ साहिब की पाठशाला में से जहां हर एक दिन सहस्र पढ़नेहारे उपस्थित हुआ करते थे वहां एक ही अठवारे में तीन सौ बालक भाग गये। इस के पीछे और भी बातें हुईं जिन के कारण साहिब बड़े उपद्रव में पड़ गये। चार और कुलीन ब्राह्मणों ने ख्रीष्ट पर अपना बिश्वास प्रगट किया इस के कारण हिन्दू लोग और भी अधिक क्रोधित हुए। ख्रीष्टीय धर्म्म की बिरुद्धता करने के उपायों के स्थित करने के लिये एक सभा हुई बरन मूर्त्तिपूजा के बिरोधी डफ साहिब के मार डालने की युक्ति किई गई। उन का यह बिचार हुआ कि यदि हम उस फिरंगी के बचन की प्रवीणता और धर्म्मोत्साह को दूसरी किसी रीति से बन्द न कर सकें तो उस का मारना ही हमारे अभिप्राय का उत्तम द्वारा होगा॥

कई लोगों में से जिन्हों ने कृपा करके पादरी साहिब को इन उपायों से प्रवीण किया था एक मनुष्य ने अपनी चिट्ठी में यों लिख भेजा कि मैं ने सुना है कि कई एक धनाढ्य बाबू लोगों ने दुष्ट लोगों को रुपैये देके आप के संग लड़ाई

झगड़ा करने की युक्ति बांधी है यदि आप इस को कुछ चिन्ता न करें तब तो अपने कामों में आप लगे रहें और नहीं तो इस संदेश को सच जानके रात को कहीं बाहर न निकलें अथवा रात्रि को मार्ग अदल बदल के आया जाया करें। दूसरे ने लिखा कि मुझे ठीक संदेश मिला है कि कई एक दुष्ट आप के मारने का अवसर ढूंढ़ रहे हैं आप रात के समय कभी कहीं बाहर न निकलिये। इन संदेशों के सुनने से भी भय ने डफ साहिब को काम से न रोका। उन्हों ने एक पत्र छपवाया जिस में यह भूमिका लिखी थी कि कलकत्ता के थोड़े बाबुओं के लिये कई एक स्पष्ट बचन। उस पत्रिका का पूरा अर्थ लिखना यहां पर असंभव है तथापि उस का निज अभिप्राय नीचे के कई एक पदों से प्रगट होगा। उन्हों ने उस में यह लिखा कि अपने विषय में धमकियों की चर्चा जो मैं ने सुनी है उसे मैं निर्मूल समझता हूं क्योंकि इस शहर के बाबुओं में से ऐसे लोग हैं जिन्हें मैं प्रिय जानता और जिन की प्रशंसा मैं करता बरन जिन को किसी समय मैं अपना प्राण सौंपने को उपस्थित हूं। यह निश्चय है

कि वह मेरे हितैषी हैं और मेरी रक्षा करने को उपस्थित हैं। मैं उस में कुछ आश्चर्य्य नहीं मानता कि कई एक लोग जो न मुझ से न मेरे यथार्थ अभिप्रायों से भली भांति प्रवीण हैं अहितैषी होके मुझ को हानि पहुंचाया चाहते हैं। परन्तु जिन के विषय की चर्चा फैल रही है उन्हों ने यद्यपि धमकियां दिई हैं तथापि मैं कुछ नहीं डरता क्योंकि मेरा भरोसा तो सर्वशक्तिमान् परमेश्वर पर है। फिर उस पत्र के अंत में इस प्रसिद्ध बचन को अर्थात् उन लोगों का लोहू जो कि ईश्वर के धर्म्म के स्वीकार करने के कारण मारे जाते हैं कलीसिया का बीज है धर्म्मपुस्तक से लेकर डफ साहिब ने अपना यह विचार प्रगट किया कि यद्यपि लोग मुझे मार डालें तथापि उस से ईश्वर की सच्चाई को और उस की सेवा को कुछ हानि न पहुंचेगी। उन्हों ने यह भी लिखा कि कदाचित् यदि यहां कोई सत्यता के कारण मारा जाय तो ईश्वर के अद्भुत उपाय में वह सहस्र पाठशालों के स्थापित करने अथवा इस बड़े देश के एक २ भाग में सहस्रों व्याख्यान के देने से हिन्दूधर्म्म के नाश करने

और प्रभु के प्रताप को प्रगट करने का अधिक उत्तम द्वारा होगा ॥

ग्यारहवां अध्याय ।

डफ साहिब के स्वभाव और प्रकृति का वर्णन ॥

उन नये मसीहियों में से एक ने यों वर्णन किया है कि प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल हम सब साहिब और मेमसाहिब के संग ईश्वर की आराधना में लगे रहते थे। साहिब की यह रीति थी कि हर एक काम को प्रतिदिन नियत समय में किया करते थे। ठीक आठ बजे सवेरे घंटा बजता था और हम सब भोजन-शाला में भोर की आराधना के लिये नित्य एकट्ठा होते थे। साहिब नित्य सब के संग सुशीलता और आदरमान के साथ हाथ मिलाके पहिले कुशलक्षेम पूछते थे फिर दाऊद का एक गीत गाके और ईश्वर के बचन के कई एक पद पढ़के घुटने टेकते थे परन्तु जो प्रार्थना डफ साहिब प्रातःकाल और सायंकाल को करते थे उस का वर्णन करना अशक्य है। यद्यपि जब कि वह बड़ी २ सभाओं में व्याख्यान करते

थे तो मैं उन को बड़ी महिमा और प्रशंसा करता था तथापि जिस समय वह अपने घर में बालक की नाईं साधारण रीति से हमारे स्वर्गबासी पिता के सन्मुख अपने मन की इच्छायें प्रगट करते थे तो मैं उन की अधिक प्रशंसा और महिमा करता था ॥

सन १८४७ ईस्वी में डफ साहिब अपने प्रिय मित्र पाद्री डाकृर चालमर्श के मरण का संदेश पाके अति शोकित हुए । विदित हो कि वह साहिब बहुत प्रसिद्ध उत्तम अधिकार के धर्म्मोपदेशक थे बरन स्काटलेण्ड की उस कलीसिया में वह सब पाद्रियों से कई एक बातों में बढ़कर थे इस कारण उन के मरण के पीछे लोग उन का उत्तराधिकारी स्थापित करने की चिन्ता में हुए । जब सभा की अनुमति लिई गई तो विदित हुआ कि अधिक लोगों के निकट डफ साहिब उस मरे हुए साहिब के बड़े अधिकार पर स्थापित होने के योग्य बिचारे गये इस कारण जनरल असंबिली की ओर से वह अपने देश की ओर जाने और धर्म्मपुस्तक के पढ़ानेवाले स्थापित होने और यों एक प्रकार से उस कलीसिया के अगुवा होने को बुलाये

गये । उस समय बहुत लोगों के डफ साहिब के विषय में उस उत्तम अधिकार के ग्रहण करने का जिस के कारण उन के अपने देश में अपने प्रिय लड़कों के संग रहने का अवसर मिलता यहां लों निश्चय हो गया कि कई एक ने चिट्ठी में और औरों ने समाचारपत्रों में इस अवसर के उन की वृद्धि समझके उन को बधाई किई । इन बातों का संदेश पाके वे हिन्दुस्तानी ख्रीष्टीय जो डफ साहिब के द्वारा सुसमाचार की प्रवीणता प्राप्त करके कलीसिया में भागी हुए थे घबराके उन से जिन्हें अपना प्रिय पिता समझते थे बिन्ती किई कि वह उन्हें न छोड़ें । इस के परे हिन्दू लोग भी यह संदेश सुनके कि साहिब का बुलौवा विलायत से हुआ है अति शोकित हुए और ब्राह्मणों में से ग्यारह बुद्धिमानों ने एक पत्र लिखके स्काटलेण्ड की कलीसिया को भेज दिया जिस में उन की यह इच्छा थी कि डाकृर साहिब को हिन्द देश में रहने की अनुमति मिले । उन्हों ने यह भी लिखा कि इस प्रसिद्ध बुद्धिमान् ने हम लोगों के लाभ के लिये अपने को अर्पण किया और बहुत कुछ रुपैये भी

व्यय किये हैं। उन की नाईं इस देश में कोई दूसरा मनुष्य कभी दृष्टि नहीं आता है। उन के बिदा होने की चर्चा के कारण भले लोग शोक और दुष्ट लोग आनन्द करते हैं। सच्चे धर्म्म के हितैषी जितने हैं वे ईश्वर से यह प्रार्थना किया करते हैं कि वह स्काटलेण्ड देश के लोगों के अभिप्रायों को जो वे साहिब के विषय में रखते हैं बदल दे। परन्तु पीछे प्रगट हुआ कि यह सब भय और घबराहट कुछ न कुछ अकारण हुई थी क्योंकि ईश्वर की इच्छा को छोड़ साहिब और किसी कारण से हिन्दुस्तान के छोड़ने को उपस्थित न हुए और कहा कि मैं मिशनरी हूं और इसी काम में मर जाऊंगा। स्काटलेण्ड की कलीसिया के लोग मुझ पर यह कृपा करें कि मेरा निज काम परदेशियों में सुसमाचार का सुनाना समझें। परदेशियों की और निज करके हिन्द देश के रहनेहारों की भलाई के हेतु मुझे इस काम में रहने दें चाहे अपने देश में ख्रीष्टीय लोगों को सुसमाचार फैलाने के लिये उसकाना हो वा यहां पर परिश्रम करना हो॥

कोई यह न समझे कि डफ साहिब अपने प्रिय

लोगों से इस लिये इतने समय लों अलग रहने पर उपस्थित हुए कि उन से प्रेम न रखते थे ऐसा नहीं है बरन इस के बिरुद्ध जब उन्हों ने अपनी प्रिय लड़की एनी नाम के मरण का संदेश पाया तो अधिक शोकित हुए बरन उस समय के बहुत दिन पीछे अपनी मेमसाहिब को चिट्ठी लिखी जिस में उस मरी हुई कन्या का यों बर्णन किया कि मैं बहुधा उस का बर्णन मुंह से नहीं करता परन्तु मन में हर घड़ी उस का रूप आता रहता है। अवश्य वह अत्यंत मोहिनी थी और मेरी सकल अवस्था भर में मुझ को और कोई ऐसा भारी शोकदायक दुःख नहीं हुआ जैसा इस के मरण के एकाएक संदेश मिलने से हुआ बरन आज लों जब एकान्त में कभी उस की सुन्दरता और सुशीलता को स्मरण करता हूं तो अकस्मात् मेरे आंखों में आंसू भर आते हैं ॥

उस साहसी और बुद्धिमान् का मन कोमल और दयालु था। वह छोटे बच्चों के खेलने और आनन्दित रखने से अत्यन्त प्रसन्न होते थे और अति दया से प्रभु की रीति पर जिस ने छोटे बच्चों को अपनी गोद में ले उन्हें आशीष

दिई चलते थे। पर कदापि कोई यह न समझे कि हिन्दुस्तान में और उन के निज देश में उन की अति प्रशंसा और माहात्म्य होने के कारण और उन के द्वारा बहुत लोगों के ख्रीष्ट पर बिश्वास लाने के कारण वह साहिब गर्बी और स्वार्थी हो गये थे। यह तो सत्य है कि हिन्दुस्तान के कई एक लोगों ने यों लिखा कि डफ साहिब को नाईं कोई हिन्द देश में दृष्टि नहीं आया परन्तु अपने विषय में उस बुद्धिमान् और ज्ञानी के जो बिचार थे सो उन के नित्य के समाचारपत्र के पढ़ने से जिस का संक्षेप नीचे लिखा जायगा विदित हो जायगा। हम उन को वैसा नहीं समझते जैसा कि वह पाठशाला में लड़कों को पढ़ाते वा बड़ी २ सभाओं में व्याख्यान करते हुए विदित हुए बरन उन को वैसा पाते हैं जैसा कि वह अपनी कोठरी में एकान्त में ईश्वर से प्रार्थना किया करते थे। हे मित्रो जब तुम्हारा यह बिचार है कि मनुष्य अपने भले कामों के द्वारा धर्म्मी ठहर सकते हैं तो नीचे की बातों पर टुक बिचार करो॥

डफ साहिब ने उस तिथिपत्र में यों लिखा कि ईश्वर मेरी अवस्था भर अपने भले अभिप्रायों

के पूरा करने के लिये मुझे उन मार्गों में जिन से अज्ञान था ले चला है ऐसा हो कि मैं अधिक योग्य होता परन्तु मुझ को कभी २ यह विदित होता है कि जहां लों मेरे संग उस का व्यवहार अधिक अद्भुत है वहां लों मैं निश्चिन्त और आलसी हो जाता हूं इस बात के कारण मुझे बड़ा शोक होता है। हे ईश्वर ऐसा न हो कि मेरी यह भयंकर दशा निरन्तर बनी रहे बरन मैं कच्चे सोने और चांदी की नाईं होऊं और जब तेरी कृपा और प्रेम से ताया जाऊं तो पवित्र और निर्मल और तेरी इच्छा के समान किया जाऊं। हे ईश्वर मेरे इस कठिन मन को कोमल और निरहंकार कर ॥

जब ऐसे मनुष्य ने अपने को ऐसा अपराधी ठहराया तो इस संसार में कौन दूसरा है जो अपने प्राण और कामों पर लंबी चौड़ी हांक सकता है। डफ साहिब ने अपने में ऐसा कुछ न पाया जिस पर भरोसा रख सकते। अनन्त-जीवन के पाने की आशा जो रखते थे सो ख्रीष्ट पर जिस ने पापियों के हेतु अपना प्राण दिया और उस लोहू पर जो सकल पाप को शुद्ध करता आश्रित थे ॥

बारहवां अध्याय ।

छुट्टी बिना बिश्राम के ॥

जिस समय स्काटलेण्ड में डफ साहिब के उस बड़े अधिकार पर आने के अस्वीकार का संदेश पहुंचा तो लोगों ने उन से यह बिन्ती किई कि कम से कम थोड़े दिनों के लिये आवें और अपना यह बिचार प्रगट किया कि यदि आप आवें तो आप के रमणीय व्याख्यान से इंगलिस्तान के मसीहियों में सुसमाचार फैलाने की अति अधिक इच्छा उत्पन्न होगी । यद्यपि साहिब इस दूसरी बेर दस बरस लों बराबर हिन्दुस्तान में रहे तथापि यदि उन का शरीर बुरे जल और पवन के कारण निर्बल न हो जाता तो वह विलायत के लोगों की यह बिन्ती न प्रसन्न करते परन्तु जब डाकृरों ने उन्हें विलायत जाने की सम्मति दिई तो उन्हों ने उस को ईश्वर की इच्छा जानके ग्रहण किई । पहिले उन्हों ने हिन्दुस्तान के कई एक मिशनों की दशा जहां तक हो सकी विदित किई इस इच्छा से कि अपने देश के खीष्टियानों से उन को भली भांति से प्रवीण करें । तब

बिदा होके सन १८५० ईस्वी के मई महीने में स्काटलेण्ड देश में फिर पहुंचे परन्तु इस बार भी उन का समय उसी रीति से बड़े २ परिश्रमों में बिताया गया जैसा कि पहिली बेर पहुंचके हुआ था ॥

जाड़े के समय में एक दूर की यात्रा करते हुए उन्हों ने यह लिखा कि जब से मैं पिछले इतवार को व्याख्यान कर चुका तब से न दिन को न रात को मेरी देह को अच्छी रीति से गरमी पहुंची ठंढी कोठरियों में ठंढे बिछौनों पर मुझे रहना पड़ता है और कभी २ ऐसा विदित होता है कि इस प्रकार के क्लेश का सहना माना सत्यता के लिये अपना प्राण देना है परन्तु यदि मैं निश्चय कर सकता कि मेरे इन कामों से प्रभु की महिमा और प्रशंसा प्रगट होती है तो मैं उस के हेतु जिस ने हमारे लिये प्राण दिया इन सकल क्लेशों को बरन यदि हो सके तो इन से अति अधिक क्लेश भी उठाने को उपस्थित होता तौभी ईश्वर ही के हाथों में मेरे काम का अंत है मेरी निर्बलता और दुर्बलता नित्य दृष्टि आती है और केवल इस बात से कि येशू ख्रीष्ट का लोहू सकल पाप से शुद्ध करता है मैं मरण को

शांति के प्राप्त करता हूं। हे धन्य मुक्तिदाता तेरे लिये कौन आनन्द से परिश्रम करने को उपस्थित न रहेगा॥

फिर उन्हों ने अपनी मेमसाहिब को यों लिखा कि मन का बोझ किसी से प्रगट करने से किसी प्रकार उतर जाता है परन्तु आप को छोड़ जो कि प्रायः पचीस बरस से मेरे सब प्रकार के दुःख और आनन्द में संभागी रही हैं और किसी से नहीं कह सकता हूं। परायों में से कोई नहीं जानता कि परिश्रमों की अधिकाई और कठिनता के कारण मेरी देह कैसी क्लेशित रहती है आप को छोड़ और किसी से उस का पूरा बर्णन करना अन्होनी बात है। कभी २ व्याख्यान करते समय मन का उत्साह देह की निर्बलता पर विजय पाता है और इस लिये लोग मुझे बली और निरोगी विचार करते हैं परन्तु यदि मुझे सोने की कोठरी में निद्रारहित और डेढ़ बजे रात को पलंग पर जाते सो भी नींद के कारण से नहीं बरन इस कारण कि निर्बलता के निमित्त और अधिक नहीं बैठ सकता और सवेरे थका और पीड़ित और सिर और गले का क्लेश सहते उठते हुए का क्लेश

देखते तो अवश्य मुझ पर चास करते परन्तु प्रभु का धन्यवाद हो कि इन कठिनताओं के बीच में भी मुझे आत्मिक आनन्द और शांति प्राप्त होती है बरन कभी २ जितना देह का क्लेश है उतनी ही अधिक मन की शांति प्राप्त होती है इस के परे जो मेरे यत्न से अच्छे फल दृष्ट आये उन से मुझे निश्चय होता है कि जो कुछ क्लेश मैं सहा करता हूं वह मेरे स्वर्गीय पिता का भेजा हुआ है और वह पिता इस आचरण से यह अभिप्राय रखता है कि मैं उस की सेवा करता हुआ निरहंकार रहा करूं ॥

यद्यपि डफ साहिब ऐसे निर्बल हो गये थे तथापि जब आमेरिका जाने की बिन्ती उन से किई गई तो उस को ईश्वर का बुलौवा समझके नहीं न कर सके। वहां के लोगों ने उन को लिखा कि यहां पर खीष्टीय तो अधिक हैं परन्तु ऐसे एक मनुष्य का बड़ा प्रयोजन है जो हमें परदेशियों में सुसमाचार फैलाने को उसकाया करे। साहिब भली भांति से जानते थे कि पश्चिम के बड़े २ दो देशों में अर्थात् यूनैटेडस्टेट्स और कानेडा में खीष्टीय प्रेम और उत्साह के मानो अंगारे भीतर ही भीतर दहकते

हैं और यदि किसी प्रकार से वे उसकाये जायें तो उन के द्वारा आधा जगत् प्रकाशित हो सकता है। साहिब का मन धर्म्म की प्रीति से भरा था और वह औरों को भी ईश्वर की प्रीति से यही प्रीति दिलाने के लिये जाने को सिद्ध हुए॥

इसी लिये अट्ठाईसवीं जनवरी सन १८५४ ईस्वी को अमेरिका जानेवाले जहाज़ पर चढ़के बिदा हुए। इस यात्रा में भी वह बड़े २ समुद्र के जोखिमों में पड़ गये क्योंकि ऐसी आंधी आई कि यात्रियों ने निश्चय किया कि जहाज़ डूब जायगा। बृहस्पति के भोर को जहाज़ का अति अद्भुत रूप दृष्टि आया वायु तो अधिक प्रबल थी परन्तु आकाश खुल गया और ठंढ की आधिक्यता के कारण जहाज़ पर पानी यहां लों जम गया था कि वह केवल हिम की बहती हुई एक बड़ी राशि बिदित हुई। उस के पटैातन और रस्सियां और कड़ियां और पालैं और कूपक और उस की सकल सामग्री हिम से ढंप गई थी। अवश्य वह जहाज़ कांच सा अति सुन्दर बिदित होता रहा परन्तु न केवल शीत की आधिक्यता के कारण यात्रियों को क्लेश हुआ

बरन हिम के इतने भारी बोझ ने जहाज़ को और भी नौ इंच पानी में डुबा दिया इस कारण सब लोग तुरन्त जहां लों हो सका हिम को तोड़ तोड़के समुद्र में गिराने लगे और अवश्य उस कठिन परिश्रम से जहाज़ी लोग जो ठंढ के कारण अधमुए हो गये थे किसी रीति से फिर गरमा गये ॥

जब जहाज़ बंदर के निकट पहुंचा तो डफ साहिब ने अपनी मेमसाहिब को यों लिखा कि ईश्वर का धन्यबाद करता हूं जिस ने हमें आंधी और समुद्र से पार करके कुशलक्षेम से बंदर में पहुंचा दिया है बरन उस यात्रा का दुःख मुझे निर्लाभ नहीं हुआ । यद्यपि मैं कभी ऐसा रोगी हुआ कि किसी बात का पूरा बिचार भी न कर सका तथापि उस समय मेरे मन में नाना प्रकार के सोच आये । सकल बीते हुए जीवन का मार्ग जिस में प्रभु ने मेरी अगुआई किई है मानो मेरे सन्मुख आया परन्तु यह शोक है कि ऐसे बिचार करके मैं अपने में केवल तुच्छता और लघुता देख सकता हूं प्रभु की कृपा और मेरी हानि दोनों क्या ही अधिक हैं । अंत को केवल मुझे इस बात से शांति

प्राप्त हुई कि ख्रीष्ट का लोहू सब पापों से शुद्ध करता है और मुझे पूरा निश्चय हुआ कि यद्यपि हमारा जहाज़ समुद्र में डूब जाय और हम यात्रियों के लक्षण और रूप भी न रह जायें तथापि ईश्वर किसी न किसी रीति से मेरे मरण द्वारा मेरे प्रियों को आत्मिक भलाई पहुंचा सकता है और अपनी महिमा प्रगट कर सकता है। यों बिचार करके मैं प्रभु की इच्छा पर पूरा भरोसा कर सका और बड़ी इच्छा किई कि यदि वह मुझे मरण से बचावे तो मैं उस की सेवा करता हुआ अधिक उत्साही और योग्य हो जाऊं। मैं उस की सेवा के मार्ग में होकर उस की अगुआई पाने की आशा रखता हूं। ऐसा हो कि जो हम सभों को प्यार करता है मुझे वह अपना सच्चा दास बनावे॥

डफ साहिब के यूनैटेडष्टेट्स में रहने का पूरा वर्णन यहां पर नहीं किया जाता है परन्तु उस का संक्षेप यह है कि लोगों ने प्रेम और प्यार से यहां लों उन का आदरमान किया कि वह अति अचंभित हुए और उन्हों ने आप वहां का सब वृत्तान्त यों वर्णन किया कि वहां की एक सभा के प्रत्येक मनुष्यों ने मानो मुझे अपना

निज मित्र ग्रोर प्रभु के कार्य्य में अपना भाई समझके मुझ से हाथ मिलाया ग्रोर इस दशा को देखकर मैं ने प्रभु की बहुत प्रशंसा ग्रोर धन्य-बाद किया जिस ने लोगों के मनों का मेरे आने के लिये उत्सुक किया था । पहिले मैं अति व्याकुल ग्रोर किसी प्रकार से डरता हुआ इस देश में पहुंचा ग्रोर उस समय अपने मन की घबराहट को दूर नहीं कर सकता था परन्तु जो कुछ उस घबराहट से रहित हुआ सो केवल अपने को ईश्वर के हाथ सैांपने ग्रोर उस के प्रार्थना करने से हुआ । कभी २ जब लोगों की मित्रता ग्रोर करुणा ग्रोर ख्रीष्टीय प्रेम देखा तो अपने मन में सोचा कि सचमुच यह ईश्वर का मुझ पर अपना स्वरूप प्रकाशित करना है ॥

अवश्य वह कृपायें जिन से जिस २ नगर में साहिब जाते थे लोग उन के संग सुव्यवहार करते थे अति अद्भुत बातें थीं । सब कोई यहां लों उन को देखने चाहते थे ग्रोर उन की बातें सुन्ने की इच्छा रखते थे कि उन का थोड़ा सा शेष बल भी जाता रहा । उस समय का बर्णन उन्हों ने आप यह किया है कि यद्यपि मैं काम की आधिक्यता को अपने

बल से बाहर जानता हूं तथापि लाचार होके उसे नहीं छोड़ता। यदि मैं अपने को यहां लों बिभाग कर सकता कि सौ मनुष्य हो जाता और उन भागों में हर एक हरकुलीस के समान बलवन्त और पौलुस के समान उत्साही और बुद्धिमान होता तथापि उस बड़े काम को उचित रीति पर पहुंचा न सकता। यदि उस के योग्य मुझ में बल होता तो यह दशा सचमुच आनन्द-कारक होती परन्तु इतना परिश्रम करनेहारा मनुष्य कभी उत्पन्न नहीं हुआ है पर मेरे लिये यह बस है कि मेरा यहां आना सर्वस निर्लाभ नहीं हुआ है॥

सचमुच साहिब का वहां जाना व्यर्थ न हुआ बरन शीघ्र उन के परिश्रमों के अनेक फल प्रगट हुए। जिस समय वह स्काटलेण्ड को लौटने का अभिप्राय करके जहाज़ पर जाते थे उस समय किसी ने एक लिफाफा उन के हाथ में दिया जिस में पैंतीस सहस्र रुपये की नोट थी। वह रुपये न्यूयार्क और फिलेडलफिया के ख्रीष्टियानों से सुसमाचार फैलाने के लिये दिये गये। इस के पीछे कानेडा के लोगों ने भी आनन्द से बहुत कुछ दिया॥

प्रगट हो कि डफ साहिब ने कभी लोगों से रुपये न मांगे परन्तु केवल सभा के सन्मुख अपने काम का बर्णन किया था सो साहिब के वहां जाने से न केवल यही फल हुआ कि रुपये दिये गये बरन अमेरिका के ख्रीष्टियानों को परदेशियों में सुसमाचार के प्रचार करने का बड़ा उत्साह और इच्छा उत्पन्न हुई जो आज लों बनी है और वहां के बहुत पुरुष और स्त्रियां हिन्दुस्तान में आके अपने भाइयों के संग जो इंगलिस्तान और स्काटलेण्ड से आये हैं प्रभु की महिमा प्रगट करने का यत्न करते रहते हैं॥

जिस दिन सवेरे डफ साहिब वहां से बिदा होने लगे उस समय उन्हों ने एक सभा के सन्मुख जो उन्हें बिदा करने को आई थी कुछ व्याख्यान किया और उस के उपरान्त बड़े धन्यबाद और प्रेम के संग उन्हों ने उस सभा को आशीष दिई जिस के पाने को सब खड़े हो गये तब भीड़ में से निकलके वह जहाज़ पर चढ़े। एक मनुष्य ने जो वहां उपस्थित था उस सवेरे का यों बर्णन किया है कि उस समय का बर्णन करना मेरी सामर्थ्य से बाहर है। सब घाट और जहाज़ के पटौतन उन लोगों से जो साहिब

से बिदा होने को आये थे भर गये । बहुत लोग मन के शोक के कारण रोते हुए उन से हाथ मिलाके जहाज़ से उतरे । जिस से इतने लोग खीष्टीय प्रेम रखते कभी दूसरा कोई यहां से दूर नहीं गया । यद्यपि उन के वहां जाने से इस प्रकार का लाभ हुआ तथापि उस का बड़ा प्रतिफल साहिब को देना पड़ा क्योंकि स्काटलेण्ड में पहुंचने के उपरान्त वह बहुत ही रोगी पड़े पहिले तो उन को मस्तक का रोग हुआ और थोड़े दिन में वह जो पहिले बलवन्त और बुद्धिमान् मनुष्य थे छोटे बालक की नाईं निर्बल और अबुद्ध हो गये परन्तु कुछ समय के उपरान्त वह अंधकार जो उन के ज्ञान पर छा रहा था निवृत्त होने लगा और बिदित हुआ कि उन के ज्ञान को कोई दृढ़ हानि नहीं प्राप्त हुई थी बरन उन को दैहिक बल धीरे धीरे प्राप्त हुआ ॥

तेरहवां अध्याय ।

डफ साहिब का अपने काम में फिर उपस्थित होना ॥

यद्यपि डफ साहिब के निरोग होने में अति

बिलंब हुआ तथापि हिन्द देश को वह किसी प्रकार से नहीं भूले और जिस समय उन की देह का बल स्थिर हुआ उसी समय से वहां फिर लौट जाने की इच्छा करने लगे ॥

सन १८५३ ईस्वी में उन्हों ने कलकत्ते के एक नये शिष्य को यों लिखा कि यद्यपि मेरी देह तो यहां है परन्तु मेरा मन नित्य तुम लोगों के संग उपस्थित रहता है । निश्चय मैं ने स्काटलेण्ड में इतने समय लों रहने का अभिप्राय नहीं किया था परन्तु हिन्दुस्तान की भलाई के हेतु मुझे इतना बिलंब हुआ । उस प्रिय देश के लिये मैं ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूं कि वह उस को सच्ची बड़ाई और समृद्धि देवे ॥

अंत को साहिब सकल अधिक प्रति-निधियों के होते ही तीसरी बार हिन्द की ओर बिदा हुए । उस समय उन का शरीर तो निर्बल था परन्तु उन का मन प्रबल और साहसी था । सो कलकत्ते में उन के पहुंचने के समय उन ख्रीष्टियानों ने जिन्हों ने उन से ख्रीष्टीय-धर्म्म की शिक्षा पाई थी उन का बड़ा आदरमान किया । साहिब के विषय में एक कहावत है

जिस से प्रगट होता है कि वह अपने बचन की प्रवीणता और उत्साह के द्वारा से न केवल यूरप और अमेरिका के सब भांति के लोगों और हिन्दुस्तान के ख्रीष्टियानों को बरन हिन्दुओं को भी दरिद्रों के ऊपर करुणा और उदारता करने को उपस्थित करते थे अर्थात् एक समय जब हिन्दुस्तान में बड़ा अकाल पड़ा तो एक धनी बंगाली ने साहिब को इस इच्छा से अपने घर में बुलाया कि हम दरिद्रों और रोगियों के विषय में सहायता करने को उपदेश प्राप्त करें जिस समय वह बाबू के घर में व्याख्यान कर रहे थे उस समय घर के दूसरे खण्ड में परदे के भीतर बहुत स्त्रियां सुन रही थीं। साहिब की बातें सुनकर उन के मन पर यहां लों प्रभाव हुआ कि अधिक रुपये नौकरों के हाथ से दरिद्रों के लिये डफ साहिब के पास भेज दिये॥

डफ साहिब के हिन्दुस्तान में पहुंचने के डेढ़ बरस के उपरान्त वह भयंकर देशोपद्रव अर्थात् बलवा हुआ जिस का वृत्तान्त मानो आंसू और लोहू की स्याही से लिखा गया। कलकत्ता नगर में अधिक उपद्रव और एकाएक राजविग्रह हुए। डफ साहिब और उन की मेम-

साहिब शहर के उस भाग में रहते थे जहां कोई और अंग्रेज न था। उन के मित्रों ने उन से अनेक बिन्तियां किईं कि कुशलक्षेम के किसी ठौर में चले जायें परन्तु उन्हों ने अपने काम में रहने को इस से अधिक अच्छा समझा और ईश्वर पर भरोसा रखके अपने व्यावहारिक कामों में लगे रहे॥

एक इतवार को सकल नगर के अंग्रेजों में एकाएक अति भय उत्पन्न हुआ और इधर उधर रक्षा पाने के निमित्त वे घूमने लगे। उस समय डफ साहिब और उन की मेमसाहिब अरु और एक अंग्रेज़ी घराने को छोड़के इतना साहस किसी में न था कि अपने घर में बना रहे। साहिब ने उस दिन का बर्णन यों लिखा है कि हमारा भरोसा ईश्वर पर स्थिर था इसी कारण हम अपने घर में रह सके और रात्रि को अपनी रीति के अनुसार लेटके ऐसे सो गये कि सवेरे हम यह कह सके कि बहुत दिन से हमें ऐसी भली नींद नहीं आई थी। उस सवेरे हम ने उस का कैसा धन्यबाद किया जो इसराएल का रक्षक होके न कभी ऊंघता न सोता है॥

उन दिनों में साहिब का काम बराबर वृद्धि पर था और उस बरस में और बरसों से अधिक समृद्धि होती रही । कालिज में प्रायः बारह सौ पढ़नेहारे उपस्थित हुआ करते थे और आनन्द से सांसारिक और ख्रीष्टीय दोनों धर्म्म की शिक्षा प्राप्त करते थे यहां लों कि हिन्दुओं ने यह दशा देखके आश्चर्य्य किया ॥

सन १८६१ ईस्वी में डफ साहिब अपने प्रिय ख्रीष्टीय भाई पाद्री गोपीनाथ नन्दी के मरण का संदेश पाके अति शोकित हुए । पढ़नेवालों को स्मरण होगा कि बलवा के समय उस पाद्री को जो दुःख और क्लेश हुए थे उन का वर्णन हो चुका है । नीचे की बातों से प्रगट है कि डाकृर डफ साहिब अपने उस मित्र को किस प्रकार प्रिय समझते थे । उन्हों ने यों लिखा है कि जिस समय मेरी उस से पिछली भेंट हुई और हम दोनों ने हाथ मिलाके घुटने टेके और एक ने दूसरे को स्वर्गीय पिता के हाथ सौंप दिया उस समय यह बिचार मुझे सर्वथा न था कि अब जब लों ईश्वर के सिंहासन के सन्मुख हम एक दूसरे को ख्रीष्ट के लोहू से मोल

लिया हुआ न जानें तब लों उस के रूप को फिर न देखेंगे। जिस प्रकार मैं ने पहिले अपने एकलौते पुत्र के मरने के कारण शोक किया उसी प्रकार मैं अपने प्रिय गोपीनाथ के मरण से रोता हूं परन्तु मैं ईश्वर की इच्छा पर नहीं कुड़कुड़ाता क्योंकि मुझे निश्चय है कि मेरा प्रिय अपने बिश्राम और प्रतिफल में प्रवेश करने को गया॥

इस के पीछे दो बरस के उपरान्त डफ साहिब को भी अपना काम हिन्दुस्तान में छोड़ने पड़ा। सन १८६३ ईस्वी के जुलाई महीने में आमातिसार रोग के कारण वह फिर मरने के निकट हुए। उन के प्राण बचाने की आसरा से डाक्टरों ने उन्हें चीन देश की ओर बिदा किया परन्तु यह उपाय भी निष्फल ठहरा और डफ साहिब ने शीघ्र जान लिया कि ईश्वर की यह इच्छा है कि उस का दास इस काम को छोड़ देवे। अवश्य इस से उन को अति शोक हुआ होगा तथापि वह भली भांति जानते थे कि ईश्वर अत्युत्तम और भला किया करता है। हिन्दुस्तानियों के निकट भी साहिब का बिदा होना अधिक शोक का कारण हुआ

बंगदेशीय हिन्दुओं की एक सभा की ओर से साहिब को एक चिट्ठी मिली जिस के उत्तर में उन्हों ने नीचे की कई एक बातें लिखीं जिन बातों से उन के जाते समय के बिचार कुछ प्रगट होते हैं। बिदित होता है कि उन्हों ने उस समय का बिचार करके जब कि सकल संसार में ख्रीष्टीय धर्म्म प्रचलित होगा बड़ी शांति पाई। उन्हों ने यों लिखा कि मैं ने बिश्वास के द्वारा बहुत बरसों से उस प्रकाशित और प्रतापी समय पर मानो दृष्टि किई है जब कि हिन्दुस्तान बरन सकल जगत में ख्रीष्टीय धर्म्म प्रचलित होगा। इस दृढ़ आसरा से परिश्रमों और दुःखों और शत्रुओं के बीच बारंबार मुझे अति शांति और अति सहायता प्राप्त हुई है बरन इस समय भी जब इस प्रिय देश से बिदा होता हूं इस आसरा से मेरा शोक किसी न किसी रीति से घटता है। आप लोगों में से कदाचित् कोई २ उस समय को देखेंगे परन्तु मुझे यह आनन्द न होगा। मैं तो बूढ़ा हूं मेरी तरुणता का बल जाता रहा और बृद्धावस्था के बश में पड़ा हूं परन्तु उस सर्बशक्तिमान और अति पवित्र ईश्वर के उपाय में जो

नित्य स्थिर रहता है हिन्दुस्तान के बिषय अंत लों मेरा बिचार लगा रहेगा । चाहे मेरा जीवन निर्बलता के दिनों में हो चाहे मैं काम में लगा रहूं चाहे मैं जहां कहीं जाऊं वा रहूं मेरा मन हिन्दुस्तान ही में लगा रहेगा ॥

फिर कई दिन के उपरान्त साहिब जिन के संग अधिक शोकी और रोते हुए लोग बंदर लों गये इंगलिस्तान को बिदा हुए । सचमुच उन लोगों ने जिन्हों ने उन को जाते देखा यद्यपि फिर उन को कभी न देखा तथापि उन्हें न भूले बरन कदाचित् आज लों हिन्दुस्तान में साहिब के नाम से अधिक किसी दूसरे का नाम आदर और प्रेम के संग स्मरण नहीं किया जाता ॥

चौदहवां अध्याय ।

डफ साहिब के अंत दिनों का बृत्तान्त ॥

यद्यपि यहां पर डफ साहिब के हिन्द देश में रहने और काम करने का मुख्य बर्णन हो चुका है तथापि हिन्दुस्तान से बिदा होने के उपरान्त जो २ परिश्रम उन्हों ने किये उन

का वर्णन करना इस पुस्तक में कुछ अवश्य नहीं है पर इतना कहना तो उचित है कि यद्यपि उन्हों ने पहिले हिन्द देश के छोड़ने को कहा था कि मैं बूढ़ा हो गया हूं तथापि उन्हों ने उस समय के पीछे ईश्वर की स्तुति और मनुष्यों की भलाई के लिये ऐसे २ कामों को अंत को पहुंचाया जैसा कि सहस्र मनुष्यों में से एक ने भी अपने जीवन भर में न किया होगा। उस समय अपने बीते हुए जीवन पर दृष्टि करके वह ऐसे परिश्रमों और कामों को स्मरण कर सकते थे॥

कलकत्ता नगर के उस घर को संती जो यहां लों छोटा था कि सब पढ़नेवाले एक संग उस में न समा सके अब एक उत्तम गृह जिस में प्रायः डेढ़ लाख रुपैये लगाये गये और जहां सहस्रों ने ज्ञान प्राप्त किया है उपस्थित है। यदि डफ साहिब अहंकारी और स्वार्थी मनुष्य होते तो कदाचित् अपने मन में यों कहते कि देखो जहां मैं अकेला रहा वहां पचास बरस के बीच में मेरी एक मिशन के अधिकार में एक सौ पंद्रह विलायती और चवालीस देशीय लोग धर्म्मोपदेश कर रहे हैं। जिन में से कोई

जोते और कोई स्वर्गीय सुख में प्रविष्ट हो गये और उन में से मैं हो ने कितनों को उस काम की ओर लगाया । सन १८३० ईस्वी में बम्बई और कलकत्ता नगरों में केवल दो ही पाठशाला थीं परन्तु अब सकल देश में दो सौ दस पाठशाला हैं जिन में पंद्रह सहस्र तरुण मुक्ति का सुसमाचार सुना करते हैं । बिचार करो कि उन पाठशालों में से कितनों की नेव मैं हो ने डाली । हमारी मिशन में जो यत्न किया गया है उस के द्वारा से छः सहस्र चार सौ अट्ठावन लोगों ने खीष्ट पर विश्वास किया है । और उन नये शिष्यों में से मेरे हो परिश्रम के द्वारा कितनों ने ऐसा किया परन्तु यह सब मेरे कामों का एक भाग है । परदेशियों में सुसमा- चार प्रचार करने के लिये जो उदारता प्रभु के लोगों के बीच में उत्पन्न हुई है वह बहुत कुछ मेरे ही यत्न से हुई है ॥

परन्तु हम डफ साहिब की उस सुफलता पर जो कि ईश्वर की आशीष से प्राप्त हुई थी लंबी चौड़ी हांकते हुए बनावट नहीं कर सकते क्योंकि उन का सरल और निरहंकार स्वभाव नीचे की बातों से बिदित है जिन

को उन्हों ने अपने मकबरे में लिखाने के लिये उचित समझा वह यह है अर्थात् एलिकजंडर डफ यहां पर लेटा है जो कि स्वभाव और कार्य्य से अपराधी है पर अपने प्रिय यीशु ख्रीष्ट के लोहू और धर्म्माचरण पर भरोसा रखके प्रभु के अनुग्रह से बचाया हुआ है। और यदि इस के परे और भी लिखा जाता तो यह लिखना उचित होता कि वह मिशनरी था जिस ने हिन्दुस्तान की भलाई के लिये कष्टों को सहके अपने जीवन देह बल बुद्धि की शक्ति और सकल सामर्थ्य का व्यय किया॥

सन १८६८ ईस्वी में ईश्वर ने उन की प्रिय स्त्री को अपने निकट बुला लिया। अवश्य जब वह उस प्रिय स्त्री की समाधि के समीप खड़े थे तो उन का मन अति शोकित रहा होगा। उस समय उन्हों ने यों लिखा कि मेरी भक्तिमती और स्नेही स्त्री जो इतने दिन शान्ति और सहायता देती रही अब नहीं है हां अब तो वह नहीं है क्योंकि ईश्वर ने उसे अपनी सेवा के लिये अपने स्वर्गीय मन्दिर के आनन्द में बुला लिया है। उस शोकित ख्रीष्टीय ने औरों की नाईं जो निराश हैं शोक न किया

यहां लों कि उन्हों ने अपने बेटे को यों लिखा कि मैं अपने मन के शोक का बर्णन नहीं कर सकता बरन यदि कर भी सकता तथापि मैं उस का बर्णन नहीं किया चाहता हूं परन्तु हां हमारा वह संबन्ध जिस पर कई देशों में नाना प्रकार के जोखिमों और क्लेशों और आनन्दों ने जिन में अड़तीस बरस लों संभागी रहे मानो छाप कर दिई थी एकाएक इस जगत से वह सम्बन्ध समाप्त हुआ ॥

हाय २ इस पर सोचते २ मेरा मन अति खेद से भर जाता है परन्तु जिस समय मैं ख्रीष्ट का और उस प्रिया का जिस को स्वर्गीय प्रताप में प्रविष्ट हुई जानता हूं बिचार करता हूं उस समय मेरे शोक को संतो आसरा और आनन्द किसी रीति से मेरे मन में उत्पन्न होता है अवश्य हम सब मिलके उस प्रभु को जिस ने क्लेश के समय मुझ पर अपनी अद्भुत कृपा प्रगट किई स्तुति कर सकते हैं ॥

अब डफ साहिब के बृत्तान्त की केवल एक बात बाकी है सो भी लिखते हैं अर्थात् सन १८७८ ईस्वी में वह यहां लों रोगी हुए कि उन का दूसरा लड़का हिन्द देश से तार

के द्वारा बुलाया गया और स्काटलेण्ड में पहुंचकर अपनी बहिन और भांजे के साथ उस मरते हुए प्रिय रोगी की सेवा में उपस्थित हुआ। डफ साहिब अपने उस पुत्र के फिर देखने से अति आनन्दित हुए और ईश्वर का धन्य-बाद किया। हम अंत समय में उन्हें एक यात्री को जो कि यात्रा के अंत लों पहुंचा है उपमा देते हैं। वह कहने लगे कि मैं जाऊं अथवा रहूं परन्तु ईश्वर के हाथ में हूं यदि उस का कोई काम मेरे लिये रह गया हो तो वह मुझे फिर कुशलता देगा नहीं तो भला। उन्हों ने नित्य औरों की चिन्ता करके उस समय प्रायः पचास लोगों के नाम बताये जिन के समीप वह चाहते थे कि निज पुस्तकालय से स्मरणार्थ पुस्तकें भेजी जायें। जब कि किसी ने उन को यह संदेश दिया कि डाक्टरों को आप की कुशलता पाने की आशा नहीं है तब उन्हों ने तुरन्त उत्तर दिया कि मैं निश्चय अति शान्ति और स्थिरता के संग अपने मन में कहा करता हूं कि हे ईश्वर तेरी इच्छा पूरी हो अब मैं मुक्ति के उपाय पर मानो दृष्टि कर रहा हूं और पहिले की उपमा में उस का

अभिप्राय और फल अधिक स्पष्ट मुझ पर प्रगट होते हैं। हां उस पवित्र और निष्कलंक बलि-प्रदान रूप मसीह ईश्वर के पुत्र पर उस मरते हुए बिश्वासी के नेत्र लगे रहे। जब उन की बेटी ने उस प्रसिद्ध गीत को सुनाया जिस में ख्रीष्ट के नाम की मधुरता का निज वर्णन है तो उन्हों ने धीमे शब्द से बड़ी करुणा के संग कहा कि हां उस की मधुरता अति अधिक है। सचमुच ख्रीष्टीय लोग कुशल के दिनों में अथवा मरते समय उस धन्य नाम में ऐसा आनन्द प्राप्त कर सकते हैं जो कि कहने और सोचने में न आ सके। फिर उस के बेटे ने दाऊद की तेईसवीं गीत को सुनाया और यद्यपि उस का पिता देखने में अचेत बिदित होता था तथापि प्रत्येक पद की समाप्ति में उन्हों ने प्रगट किया कि मैं सुनता हूं॥

कैसे धन्य हैं वे बिश्वासी जो कि जिस समय मृत्यु की छाया की तराई में फिरते तो उस समय भी ईश्वर के दासों के संग कह सकते हैं कि मुझे कुछ डर नहीं है क्योंकि प्रभु मेरे संग है। फिर वह जीभ जिस ने बारंबार हिन्दुस्तान के लोगों के और उन के हेतु औरों से बिन्तियां किईं और

कुछ शब्द न बोल सके परन्तु साहिब अपने प्रिय लोगों के शब्द को पहिचान सकते थे और एक २ से हाथ मिलाके अपना प्रेम प्रगट किया। उन के जीवन का सूर्य्य क्रम २ से आकाश के मण्डल के पीछे छिपा जाता था। प्रभु का शब्द जिसे वे बहुत प्यार किया करते थे और जिस की सेवा उन्हों ने दृढ़ भक्ति से किई थी उन्हें एक उत्तम अधिकार पर जाने का अधिकार देता था। वह चेला स्वर्गीय मुकुट पाने को सनातन के लिये क्रूश उतारता था। और यों पूरी शांति और आनन्द के संग एलिकजंडर डफ अनन्त सुख में प्रविष्ट हुए। उन का आत्मा देह को छोड़ प्रभु के समीप गया और देह मिट्टी में मिल गई परन्तु जो आनन्द और सुख उन को तब होगा जब कि वह देह अबिनाशी होके उठेगी वह हमारे बिचार और ज्ञान से परे और बाहर है॥

इति।